THE MDSU QUARTERLY RESONANCE

TRIVENI

Triveni Stands for Gyan (Knowledge), Sanskriti (Culture) and Vikas (Development)

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY

www.mdsuajmer.ac.in

ISSUE 2 (VOLUME 2)

Nov. 2025 - Jan. 2026

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

Prime Minister

संदेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के 13वें दीक्षांत समारोह के आयोजन के बारे में जानकर प्रत्तन्नता हुई। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों, उनके परिजनों, शिक्षकगण और कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारी संस्कृति में ज्ञान के महत्व पर बल देते हुए कहा गया है, 'त हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' अर्थात् गंगार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है। दीक्षांत समारोह वर्षों की साधना और परिश्रम का उत्सव मात्र नहीं, बल्कि औपचारिक शिक्षा के बाद भी सतत् सीखने की प्रकिया में नए अवसरों, नए संकल्पों और उज्वल भविष्य की ओर बढ़ने की एक प्रेरक शुरुआत है।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में जहां अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाएं संकट का सामना कर रही हैं, वहीं भारत विकास के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। आज कला हो, विज्ञान हो, वाणिज्य हो अथवा खेल, हर क्षेत्र में असीमित अवसरों का निर्माण हो रहा है, जो आप जैसे प्रतिभाशाली युवाओं के लिए संभावनाओं के नये द्वार खोल रहा है।

यह आप जैसे युवाओ की मेधा व कौशल का ही परिणाम है कि वैश्विक स्तर पर देश का मान निरंतर बढ़ रहा है। बदलते समय के साथ हमारे सामने अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, 6 जी तकनीक, क्वांटम कंप्यूटिंग व स्वच्छ ऊर्जा जैसे नए क्षेत्रों में निर्णायक बढ़त लेने का भी यह ऐतिहासिक अवसर है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य की जरूरतों के अनुरूप स्वयं को ढालते हुए अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास से आप देश को नई ऊंचाइयों पर लेकर जाएंगे।

दीक्षांत समारोह का यह अवसर संस्थान से जुड़े सभी लोगों को अपनी उपलब्धियों का उत्सव मनाने के साथ-साथ भविष्य के लिए तैयार होने का भी है। आशा है कि आप सभी अपने लक्ष्यों को राष्ट्र की प्रगति से जोड़कर देश व समाज की बेहतरी में अपना अमूल्य योगदान देते रहेंगे।

समारोह में उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को बधाई व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

नई दिल्ली
अग्रहायण 20, शक संवत् 1947
11 दिसम्बर, 2025

(नरेन्द्र मोदी)

1 — *अनुक्रमाणिका*

2 — *पुरोवाक् .....*

3 — *ऋतस्य पन्थाः.....*

4-6 — प्रथम खंड - प्रशासनिक सुधार एवं नीतिगत पहल

7-10 — द्वितीय खंड - शोध एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता

11-12 — तृतीय खंड - जैव विविधता एवं पर्यावरणीय पहल

13-15 — चतुर्थ खंड - खेलकूद एवं सहशैक्षिक उपलब्धियां

16-18 — पंचम खंड - सांस्कृतिक एवं मूल्य शिक्षा कार्यक्रम

19 — षष्ठ खंड - स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम

20 — सप्तम खंड - सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामुदायिक कार्य

21-23 — अष्टम खंड - दीक्षांत समारोह

24 — नवम खंड - अवसंरचना एवं डिजिटल पहल

25-26 — दशम खंड - शैक्षणिक संगोष्ठियां एवं सम्मेलन

27-30 — एकादश खंड - विशेष व्याख्यान, मूल्य शिक्षा एवं सम्मान

31-44 — द्वादश खंड - मीडिया एवं फोटो गेलेरी

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर

नवंबर 2025 से जनवरी 2026 तक की गतिविधियों का प्रतिवेदन

पुरोवाक् .....

त्रिवेणी का यह दूसरा संस्करणआपके समक्ष रखते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है | यह संस्करण महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की नवंबर 2025 से जनवरी 2026 तक की अवधि में संपन्न हुई विभिन्न शैक्षणिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों का व्यापक प्रलेख प्रस्तुत करता है। इस अवधि में विश्वविद्यालय ने अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए, नवीन योजनाओं की शुरुआत की और परंपरागत मूल्यों के साथ आधुनिक शिक्षा के समन्वय का प्रयास किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान संवर्धन, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और अधिक सुदृढ़ किया।इस विस्तृत प्रतिवेदन से यह स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर ने नवंबर 2025 से जनवरी 2026 तक की अवधि में शैक्षणिक उत्कृष्टता, प्रशासनिक सुधार, सांस्कृतिक संरक्षण, पर्यावरणीय जागरूकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के दूरदर्शी नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने परंपरागत मूल्यों और आधुनिक शैक्षणिक आवश्यकताओं के बीच सुंदर संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है।

शोध शुल्क में समानता लाना, परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ाना, शोधचक्र का सफल क्रियान्वयन, मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र का पुनरुद्धार, जैव विविधता संरक्षण, खेलकूद में उत्कृष्टता, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन, स्वदेशी कंसोर्टियम की अभिनव पहल और भव्य दीक्षांत समारोह जैसी उपलब्धियां विश्वविद्यालय की प्रगतिशील सोच को दर्शाती हैं।

साथ ही, विश्वविद्यालय ने कर्मचारियों की कमी, नैक मान्यता का लंबित होना और अवसंरचनात्मक चुनौतियों जैसे मुद्दों को भी खुलकर स्वीकार किया है। यह पारदर्शिता एक स्वस्थ प्रशासनिक दृष्टिकोण का प्रतीक है। वैदिक पार्क, दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का पूर्ण क्रियान्वयन, लीप योजना और अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसी महत्वाकांक्षी योजनाएं विश्वविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत करती हैं।

विश्वविद्यालय "विजन उत्कर्ष-2030" के तहत एक व्यापक विकास योजना पर कार्य कर रहा है जो परंपरा और नवाचार, शैक्षणिक कठोरता और व्यावहारिक कौशल, व्यक्तिगत उत्कृष्टता और सामाजिक उत्तरदायित्व तथा स्थानीय संदर्भ और वैश्विक मानकों के बीच संतुलन स्थापित करती है। प्रधानमंत्री, राज्यपाल, विधानसभा अध्यक्ष और विभिन्न मंत्रियों द्वारा दीक्षांत समारोह के लिए भेजे गए शुभकामना संदेश विश्वविद्यालय की बढ़ती प्रतिष्ठा के प्रमाण हैं।

नवंबर 2025 से जनवरी 2026 की यह अवधि विश्वविद्यालय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण संक्रमण काल के रूप में देखी जा सकती है, जिसमें अनेक नवीन पहलों की नींव रखी गई है। यदि इन योजनाओं को समयबद्ध तरीके से क्रियान्वित किया जाए और चुनौतियों का समाधान किया जाए, तो महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण देश के अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों में अपना विशिष्ट स्थान बना सकता है।

(प्रो० ऋतु माथुर)
संपादक

ऋतस्य पन्थाः.....

प्रिय शिक्षकगण, अधिकारीगण, कर्मचारी साथी, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं सम्मानित पाठकवृन्द,

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की त्रैमासिक पत्रिका *"त्रिवेणी"* के इस नवीन अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल विश्वविद्यालय की गतिविधियों का दस्तावेज नहीं है, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और विकास की उस त्रिवेणी का प्रतीक है, जिस पर हमारा विश्वविद्यालय गर्व करता है।

विश्वविद्यालय ने शैक्षिक सुधार, शोध, नवाचार, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बहुविषयक शिक्षा, अकादमिक लचीलापन, कौशल विकास, शोध उन्मुखता तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के समन्वय की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। हमारा उद्देश्य केवल उपाधियाँ प्रदान करना नहीं, बल्कि समाज के लिए संवेदनशील, सक्षम और मूल्यनिष्ठ नागरिकों का निर्माण करना है।

मुझे यह देखकर विशेष संतोष होता है कि विश्वविद्यालय परिसर पर्यावरणीय चेतना, हरित पहल, डिजिटल सशक्तिकरण और सामाजिक उत्तरदायित्व का एक सजीव मॉडल बनता जा रहा है।*विजन उत्कर्ष 2030*के माध्यम से हम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर का उत्कृष्ट संस्थान बनाने की दिशा में दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

मैं इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों—शिक्षकगण, अधिकारीगण, कर्मचारी साथियों और विद्यार्थियों—के समर्पण, परिश्रम और प्रतिबद्धता के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी के सहयोग से ही विश्वविद्यालय निरंतर नई ऊँचाइयों को स्पर्श कर रहा है।

जनवरी माह में मनाए जाने वाले मकर संक्रांति एवं रथ सप्तमी जैसे पावन पर्व भारतीय सनातन परम्परा में सूर्योपासना, ऊर्जा एवं नवचेतना के प्रतीक हैं। रथ सप्तमी को भगवान सूर्य की द्वादश रश्मियाँ संपूर्ण जगत को प्रकाश, उष्मा और जीवन का संदेश देती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसी प्रकार*त्रिवेणी*पत्रिका के द्वादश खण्ड भी ज्ञान, अनुसंधान, संस्कृति और नवाचार की द्वादश किरणों के रूप में विश्वविद्यालय की अकादमिक प्रकृति का मार्ग प्रशस्त तथा विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हुए बौद्धिक उन्नयन का सशक्त माध्यम सिद्ध होंगे।

अंत में, मैं आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य, रचनात्मक सोच और सतत प्रगति की कामना करता हूँ। आइए, हम सब मिलकर महर्षि दयानंद सरस्वती के संदेश—*"सत्य को जानो, सत्य को जियो और सत्य के लिए जियो"*—को अपने जीवन और कार्य में आत्मसात करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना सार्थक योगदान दें।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल)

कुलगुरु

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

प्रथम खंड

प्रशासनिक सुधार एवं नीतिगत पहल

कुलसचिव का पदस्थापन

राज्य सरकार द्वारा विगत एक माह से रिक्त पड़ेपद पर होनहार एवं कर्तव्यनिष्ठ राजस्थान प्रशासनिक अधिकारी श्री कैलाश चन्द्र शर्मा को विश्वविद्यालय का कुलसचिव नियुक्त किया गया| कुलसचिव ने 1 नवम्बर 2025 को विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया |

अभियंताओं की नियुक्ति

वर्षों से लंबित तकनीकी पदों पर नियुक्ति आदेश जारी होना विश्वविद्यालय के बुनियादी ढांचे के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जल संसाधन विभाग द्वारा जारी आदेशों के तहत श्री प्रदीप कुमार प्रजापत को सहायक अभियंता (सिविल) तथा श्रीमती इति श्री कुमावत को कनिष्ठ अभियंता के रूप में नियुक्त किया गया है। इन नियुक्तियों से विश्वविद्यालय परिसर के रखरखाव, निर्माण, मरम्मत एवं विकास कार्यों में तेजी आने की उम्मीद है, जो लंबे समय से तकनीकी स्टाफ की कमी के कारण प्रभावित थे।

शोध शुल्क में समानता की दिशा में ऐतिहासिक निर्णय

विश्वविद्यालय प्रशासन ने नवंबर माह में एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए निजी एवं राजकीय महाविद्यालयों के बीच पीएचडी प्रवेश शुल्क में व्याप्त असमानता को समाप्त करने का ऐतिहासिक कदम उठाया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने छात्रों से मिल रही शिकायतों और विभिन्न छात्र संगठनों द्वारा दिए जा रहे प्रतिवेदनों के मद्देनज़र शोधार्थियों के हित में यह निर्णय लिया। इस निर्णय के अनुसार, विश्वविद्यालय से संबद्ध सभी निजी महाविद्यालयों द्वारा लिया जाने वाला शोध शुल्क अब राजकीय वाणिज्य, प्रबंधन एवं शिक्षा संकाय के महाविद्यालयों के शुल्क के अनुरूप होगा।

नवीन शुल्क संरचना के अनुसार, विज्ञान संकाय के छात्रों से पीएचडी प्रवेश शुल्क के रूप में ₹3927और कला, ललित कला तथा समाज विज्ञान संकाय के छात्रों से ₹2927 की राशि ली जाएगी। यह फीस पीएचडी प्रवेश-2025 के आवेदित अभ्यर्थियों पर लागू होगी। प्रो. अग्रवाल ने स्पष्ट किया कि इस निर्णय से शोध के इच्छुक विद्यार्थियों पर पड़ने वाला आर्थिक बोझ न केवल कम होगा, बल्कि शोध कार्य के क्षेत्र में राजकीय और निजी संस्थानों के बीच की असमानता भी समाप्त होगी। यह निर्णय विश्वविद्यालय की सामाजिक न्याय और समावेशी शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

परीक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और सुदृढ़ता के प्रयास

विश्वविद्यालय ने परीक्षा प्रणाली की शुचिता एवं पारदर्शिता को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए घोषणा की कि **आगामी सत्र से विश्वविद्यालय परिसर में संचालित सभी शिक्षण विभागों की परीक्षाएं अब एक ही स्थान पर आयोजित** की जाएंगी। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि विभागवार परीक्षाओं को एक

स्थान पर संचालित करने से न केवल परीक्षाओं की निगरानी और अनुशासन सुनिश्चित होगा, बल्कि इससे परीक्षा आयोजन पर होने वाले अनावश्यक व्यय में भी उल्लेखनीय कमी आएगी।

यह पहल छात्रों के हित में एक बड़ा कदम है क्योंकि इससे परीक्षा के दौरान समान परीक्षा वातावरण बनेगा तथा सभी छात्रों को समान सुविधाएं प्राप्त होंगी। परीक्षा कार्यों से जुड़े समन्वय, पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन कार्यों में भी संबंधित अधिकारियों को सुविधा होगी। विश्वविद्यालय की प्रगति में पारदर्शिता, अनुशासन और दक्षता तीनों आवश्यक तत्व हैं। इस दिशा में उठाया गया यह कदम एकीकृत परीक्षा केंद्र की अवधारणा को मूर्त रूप देगा और भविष्य में विश्वविद्यालय के परीक्षा प्रबंधन की उत्कृष्ट मिसाल बनेगा।

इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय ने **ऑन-स्क्रीन मार्किंग प्रणाली** को लागू करने में भी उल्लेखनीय प्रगति की। अगस्त माह में प्रायोगिक रूप से शुरू की गई **यह प्रणाली राजस्थान में पहली बार किसी विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई गई।** एक माह तक छोटी परीक्षाओं के मूल्यांकन डिजिटल तरीके से कराने के बाद विश्वविद्यालय ने केंद्रीकृत मूल्यांकन केंद्र बनाने की योजना पर काम करना प्रारंभ किया। इससे न केवल उत्तर पुस्तिकाओं की जांच में पारदर्शिता आई है, अपितु परिणाम समय पर जारी करना भी संभव हो सका है।

नियोजन एवं निगरानी मंडल का गठन(प्लानिंग एंड मॉनिटरिंग बोर्ड)

विश्वविद्यालय के विकास एवं संवर्धन के लिए माननीय कुलगुरु महोदय की अध्यक्षता में एक योजना एवं निगरानी मंडल (प्लानिंग एंड मॉनिटरिंग बोर्ड) का गठन किया गया। इस मंडल में प्रख्यात शिक्षाविद एवं स्वदेशी चिन्तक प्रो भगवती प्रकाश शर्मा, पूर्व कुलपतिएवं अध्यक्ष, यूनेस्को महात्मा गाँधी शांति एवं स्थाई विकास संस्थान, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा एवं राजस्थान लोक सेवा आयोग सदस्य प्रो परमेन्द्र कुमार दशोरा, कोटा विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो भगवती प्रसाद सारस्वत एवं वरिष्ठ चिन्तक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ प्रो नारायण लाल गुप्ता को सदस्य के रूप में नामित किया गया। इस बोर्ड में समस्त संकायाध्यक्ष, अधिष्ठाता – छात्र कल्याण प्रो सुभाष चन्द्र, प्रो सुब्रतो दत्ता, प्रो मोनिका भटनागर, वित्त नियंत्रक, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील कुमार टेलर तथा ए सी पी डॉ. विनोद कुमार जैन को भी सदस्य बनाया गया है | कुलसचिव इस बोर्ड के सदस्य सचिव हैं |

इस मंडल का कार्यकाल तीन वर्ष का निर्धारित किया गया है। कुलगुरु ने बताया कि यह मंडल विश्वविद्यालय की वित्तीय, प्रशासनिक एवं अकादमिक विकास की योजनाएं तैयार करेगा। विश्वविद्यालय के विकास, रखरखाव तथा सुधार के लिए मंडल की सिफारिशें महत्वपूर्ण होंगी। संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, शिक्षा और शोध के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार, नवाचार एवं उत्कृष्टता को बढ़ावा देना इस मंडल का प्रमुख उद्देश्य होगा। यह मंडल विश्वविद्यालय के दीर्घकालिक विकास की दिशा में नीतिगत निर्णय लेने, योजनाओं की निगरानी तथा मूल्यांकन के माध्यम से विश्वविद्यालय के समग्र विकास में सहयोग करेगा।

विद्या परिषद् की 81वीं बैठक में शिक्षा सुधारों पर अहम निर्णय

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में 27 जनवरी 2026 को माननीय कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में विद्या परिषद् की 81वीं बैठक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। बैठक में विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं तथा भावी योजनाओं से जुड़े कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए, जो विश्वविद्यालय के समग्र विकास की दिशा में मील का पत्थर साबित होंगे।बैठक में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को लागू करने हेतु तैयार किए गए अध्यादेश को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। इससे विश्वविद्यालय में शिक्षा व्यवस्था को नवीन, बहुआयामी एवं कौशल-आधारित स्वरूप मिलने की राह प्रशस्त हुई है।

इसके पश्चात विद्या परिषद् की 79वीं एवं 80वीं बैठक के कार्यवृत्त तथा अनुपालना रिपोर्ट की पुष्टि की गई। साथ ही विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 19 (18) के अंतर्गत माननीय कुलगुरु को प्राप्त शक्तियों के तहत जारी किए गए विभिन्न आदेशों को भी परिषद् द्वारा अनुमोदित किया गया।बैठक में एक महत्वपूर्ण निर्णय के तहत विश्वविद्यालय परिसर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ की स्थापना के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। इसके साथ ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन एवं विचारधारा को विश्वविद्यालय के अन्य सम्बद्ध पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने का भी निर्णय लिया गया, जिससे विद्यार्थियों में राष्ट्रवादी एवं मूल्यपरक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकेगा।

शैक्षणिक नवाचार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए महाविद्यालयों में चुनावी शिक्षा को शैक्षणिक पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित करने का प्रस्ताव पारित किया गया। इससे विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों, मतदाता जागरूकता एवं नागरिक कर्तव्यों के प्रति समझ विकसित होगी।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में Learn-Earn-Perform (LEaP) योजना को प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया तथा इस हेतु तैयार किए गए अध्यादेश को भी स्वीकृति प्रदान की गई। यह योजना विद्यार्थी को आर्थिक रूप से सक्षम करने के अतिरिक्त उन्हें रोजगार कौशल भी प्रदान करेंगी |

इसी क्रम में शोध एवं नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से Enhance Studies, Enhance Development (ESED) Research Project Scheme प्रारम्भ करने तथा उससे संबंधित अध्यादेश को स्वीकार किया गया।इस योजना से विकसित भारत केन्द्रित शोध एवं अनुसन्धान को बढ़ावा मिलेगा |

एमडीएसयू • पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ का प्रस्ताव स्वीकार किया

एकेडमिक काउंसिल: कॉलेजों में चुनावी शिक्षा को कोर्स के रूप में करेंगे शामिल

एमडीएसयू परिसर में लर्न-अर्न परफॉर्म स्कीम शुरू करेंगे

द्वितीय खंड

शोध एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता

पीएचडी शोधार्थियों के लिए व्यापक पाठ्यकार्य (कोर्स वर्क)

विश्वविद्यालय ने प्रथमतः नवंबर माह में नवपंजीकृत पीएचडी शोधार्थियों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप, पंद्रह दिवसीय पाठ्यकार्यका आयोजन किया। यह कार्यक्रम शैक्षिक शोध के उद्देश्य को स्पष्ट करने और शोधार्थियों को आधुनिक शोध प्रविधियों से परिचित कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। उद्घाटन कार्यक्रम में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने शोधार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शोध का असली उद्देश्य समाज एवं राष्ट्र की समस्याओं का समाधान होना चाहिए।

उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि शोधकर्ता केवल डिग्री या नौकरी के लिए शोध करते हैं, तो उनका शोध समाज के लिए अप्रासंगिक हो जाता है। आज के अकादमिक शोध के परिदृश्य में अनेक बार यह देखा गया है कि शोध केवल डिग्री प्राप्ति की औपचारिकता बनकर रह गया है, जबकि उसका वास्तविक उद्देश्य राष्ट्र के विकास में योगदान देना होना चाहिए।

कुलगुरु ने 'सीखने' के साथ 'भुलाने' की आवश्यकता पर भी बल दिया, ताकि विदेशी और अप्रासंगिक पद्धतियों के स्थान पर भारतीय संदर्भ के अनुरूप दृष्टिकोण को अपनाया जा सके। उन्होंने कहा कि शोध की गुणवत्ता मूल सिद्धांतों, प्रत्यक्ष और प्रमाण की स्पष्ट समझ पर निर्भर करती है। इस पाठ्यकार्यमें शोधार्थियों को शोध प्रविधि, शोध के विभिन्न प्रकार, मापन-चयन, आँकड़ों का संग्रह, शोध प्रस्ताव लेखन, सूचना संग्रह, कम्प्यूटर तकनीकी, शोध शुद्धता, ई-स्रोतों, संदर्भ प्रबंधन, ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण आदि की व्यापक जानकारी प्रदान की गई।

जनवरी माह में आयोजित द्वितीय पाठ्यकार्यकार्यक्रम में मानविकी एवं ललित कला संकाय के अट्ठानवे नवपंजीकृत शोधार्थियों ने सहभागिता की। इनमें हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, चित्रकला एवं संगीत विषयों के शोधार्थी सम्मिलित थे। उल्लेखनीय है कि 98 शोधार्थियों में से 33 शोधार्थी यूजीसी जूनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त कर रहे हैं, इनमें महिला शोधार्थियों के संख्या 45 है । समापन समारोह में कुलगुरु ने शोधार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए कहा कि इस कोर्स वर्क के माध्यम से शोधार्थियों को उच्च स्तरीय शोध तकनीकों का ज्ञान मिलेगा, जो उनके शोध कार्य को प्रभावी बनाने में विशेष सहायता करेगा।

15 दिवसीय तृतीय पीएच.डी. पाठ्यकार्य प्रारंभ-डिजिटल व शोध प्रविधि पर विशेष जोर

अजमेर। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय में नव प्रवेशित पीएच.डी. शोधार्थियों के लिए शोध अनुभाग द्वारा**28 जनवरी से 13 फरवरी**तक**15 दिवसीय पाठ्यकार्य**का आयोजन किया जा रहा है। **'शोध प्रविधि एवं कंप्यूटर अनुप्रयोग'** आधारित यह पाठ्यकार्य वाणिज्य, प्रबंधन अध्ययन, शिक्षा शास्त्र एवं शारीरिक शिक्षा संकाय के**91 शोधार्थियों**के लिए आयोजित किया गया है।

शोध निदेशक**प्रो. सुब्रतो दत्ता**एवं पाठ्यक्रम समन्वयक**डॉ. अश्विनी तिवारी**के अनुसार कोर्स वर्क में शोध प्रविधि, शोध प्रस्ताव लेखन, आंकड़ा संग्रहण, कंप्यूटर तकनीक, शोध शुचिता एवं शैक्षणिक सत्यनिष्ठा जैसे विषयों पर विशेषज्ञ व्याख्यान होंगे। साथ ही**यूजीसी-इनफ्लिबनेट**के शोध चक्र, शोध गंगा, शोध गंगोत्री, शोध शुद्धि एवं 'वन नेशन, वन सब्स्क्रिप्शन' परियोजनाओं पर भी मार्गदर्शन दिया जाएगा।

शोधचक्र प्रणाली का सफल क्रियान्वयन

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय ने**शोधचक्र अपनाने वाला राजस्थान का पहला राज्य विश्वविद्यालय** बनने का गौरव प्राप्त किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि इस प्रणाली के माध्यम से शोध कार्य में पारदर्शिता एवं नियमितता सुनिश्चित हो सकेगी | इससे शोधार्थियों को पहली बार आवेदन से लेकर शोध प्रस्ताव, प्रगति रिपोर्ट और सुपरवाइजरी प्रक्रिया तक सभी कार्य ऑनलाइन करने की सुविधा मिलेगी।

इस प्रणाली से शोध कार्य की संपूर्ण ट्रैकिंग और मॉनिटरिंग संभव होगी। शोधार्थी और पर्यवेक्षक दोनों को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर समन्वय में सुविधा मिलेगी। कुलगुरु ने बताया कि यह शोधचक्र पेटेंट क्लाउड आधारित तकनीक पर विकसित है, जिसमें शोध पर्यवेक्षक और शोधार्थी दोनों लॉगिन कर अपनी गतिविधियां दर्ज कर सकेंगे। इससे शोध की गुणवत्ता में सुधार होगा और पारदर्शिता बढ़ेगी।

मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र का प्रभावी सञ्चालन

विश्वविद्यालय के मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र का प्रभावी सञ्चालन विगत वर्षों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा। यूजीसी द्वारा बंद किए जाने की कगार पर पहुंचे इस केंद्र को कुलगुरु के प्रयासों से पुनर्जीवित किया गया। दिसंबर माह में आयोजित एमएमटीटीसी की शैक्षणिक सलाहकार समिति की बैठक में वर्ष 2026 के लिए व्यापक कार्ययोजना को मंजूरी दी गई।

निदेशक प्रो. शिव प्रसाद के अनुसार अगले सत्र से एनईपी संवेदीकरण अभिविन्यास कार्यक्रम, लघु अवधि कार्यक्रम, रिफ्रेशर कोर्स तथा फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम आयोजित किए जाएंगे। इनमें छत्तीस अनिवार्य कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें चौबीस एनईपी संवेदीकरण कार्यक्रम ऑनलाइन, पांच लघु अवधि कार्यक्रम (दो ऑफलाइन, तीन ऑनलाइन), पांच रिफ्रेशर कोर्स और एक फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम सम्मिलित हैं।

प्रमुख विषयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारतीय ज्ञान प्रणाली, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मूल्य शिक्षा, आत्मनिर्भर भारत, जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन और शोध पद्धति आदि सम्मिलित किए गए हैं। विशेष रूप से महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन पर भी एक विशेष पाठ्यकार्य आरंभ करने की योजना है। कुलगुरु ने बताया कि इस केंद्र का लक्ष्य 31 मार्च 2026 तक 3500 शिक्षकों को प्रशिक्षित करना है।

शैक्षणिक सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन

विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सहयोग और अनुसंधान संवर्धन के लिए विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के साथ कई समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जिनमें से प्रमुख निम्नानुसार हैं :-

- **आर. के. पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़**
- **सोफिया कॉलेज, अजमेर**
- **राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली**
- **सेंट्रल अकादमी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, अजमेर**
- **राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ़**
- **राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा**
- **डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर**
- **बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर**

उक्त समझौतों के अंतर्गत फैकल्टी संवर्धन एवं शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कुलगुरु ने बताया कि इससे दोनों संस्थानों के बीच अकादमिक सहयोग बढ़ेगा और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा। इन समझौतों के बारे में बताते हुए कुलगुरु प्रो अग्रवाल ने कहा कि इनका मुख्य उद्देश्य अकादमिक गुणवत्ता संवर्धन, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संयुक्त आयोजन, शिक्षा-दर्शन, भारतीय शिक्षा प्रणाली, प्रबंधन एवं व्यक्तित्व विकास में सहयोग को बढ़ावा देना है। समाज, पर्यावरण, विकास एवं शिक्षा के अंतर्संबंधों पर जागरूकता और ज्ञान सृजन को भी प्राथमिकता दी जाएगी। साथ ही शैक्षणिक, शोध एवं नवाचार आधारित गतिविधियों के संवर्धन, संयुक्त शोध परियोजनाएं, सेमिनार, कार्यशालाएं, फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम, विद्यार्थियों के लिए अकादमिक एवं कौशल-विकास गतिविधियां, पाठ्यक्रम समृद्धि तथा अनुसंधान प्रकाशनों में सहयोग सम्मिलित हैं। सभी संस्थान विश्वविद्यालय के साथ मिलकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन और भारतीय ज्ञान परंपरा को सशक्त करने के लिए संयुक्त प्रयास करेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम

जनवरी माह में किशनगढ़ स्थित आरके पाटनी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा आभासी पटल पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर आधारित आठ दिवसीय उन्मुखीकरण एवं संवेदनशीलता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मालवीय मिशन ट्रेनिंग सेंटर और महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में देशभर से 150 से अधिक शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

शोध में उत्कृष्टता

विश्वविद्यालय ने शोध के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की। विगत वर्ष में लगभग साठ पीएचडी उपाधियाँ प्रदान की गईं और पचास से अधिक विद्यार्थियों ने नेट अथवा जेआरएफ में सफलता हासिल की। वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन स्कीम के

माध्यम से शोधार्थियों को राष्ट्रीय स्तर के शोध संसाधनों तक पहुंच मिली। दीक्षांत समारोह में 54 विद्यावाचस्पति उपाधियां प्रदान की गई।

PRIDE OF OUR UNIVERSITY

विश्वविद्यालय का गौरव

प्राणीशास्त्र विभाग की उल्लेखनीय उपलब्धि रही जब विभाग की दो वर्तमान शोधार्थी और एक पूर्व विद्यार्थी का विभिन्न लोक सेवा आयोगों के माध्यम से सहायक आचार्य के पद पर चयन हुआ।

- हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा शोधार्थी नेहा का चयन 51 पदों में 5वीं रैंक के साथ हुआ। वह प्रो. सुभाष चंद्र के मार्गदर्शन में अजमेर क्षेत्र में पॉली अपशिष्ट के वैज्ञानिक प्रबंधन पर शोधकार्य कर रही हैं।
- हेमा कंवर का राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा 64 पदों में 54वीं रैंक के साथ चयन हुआ।
- प्राणीशास्त्र विभाग से वर्ष 2017 में स्नातकोत्तर उत्तीर्ण समाराम देवासी का भी आरपीएससी द्वारा 47वीं रैंक के साथ चयन हुआ।

पीएचडी शोधार्थियों के लिए व्यापक पाठ्यकार्य (कोर्स वर्क)

तृतीय खंड

जैव विविधता एवं पर्यावरणीय पहल

दुर्लभ पक्षी प्रजातियों का प्रलेखन

पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा किए गए पूर्व-शीतकालीन परिसर पक्षी सर्वेक्षण में एक महत्वपूर्ण खोज हुई जब अजमेर क्षेत्र में पहली बार पर्पल रम्प्ड सनबर्ड की उपस्थिति दर्ज की गई। यह प्रजाति सामान्यतः भारत के दक्षिणी भागों में पाई जाती है, लेकिन इस बार इसे विश्वविद्यालय परिसर के भीतर कचनार वृक्ष पर पुष्पों से आहार करते हुए देखा गया। यह अवलोकन इस क्षेत्र की जैव विविधता के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण योगदान है।सर्वेक्षण दल में विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. प्रवीण माथुर, डॉ. विवेक शर्मा, पवन सिंह, कल्याण प्रसाद तथा रौनक चौधरी सम्मिलित थे। पुष्प-निर्भर पक्षियों की उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि विश्वविद्यालय परिसर में पौधों की विविधता संरक्षण और संवर्धन के प्रयास पारिस्थितिक संतुलन को सुदृढ़ बना रहे हैं। विशेषज्ञों का मत है कि इस प्रकार की दर्ज उपस्थिति से यह स्पष्ट होता है कि बदलते जलवायु पैटर्न और वनस्पति संरचना पक्षियों के वितरण क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं।

एशियाई जलपक्षी गणना

जनवरी माह में पर्यावरण विज्ञान विभाग की ओर से एशियन वाटर बर्ड सेंसस के तहत जिले में जल पक्षियों का व्यापक सर्वे किया गया। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर की गणना 3 से 18 जनवरी तक चली, जिसका उद्देश्य जल पक्षियों और आर्द्रभूमियों की स्थिति का आकलन कर संरक्षण को लेकर जागरूकता बढ़ाना था। 15 जनवरी को आनासागर झील पर हुई गणना में कुल 96 पक्षी प्रजातियों की उपस्थिति दर्ज की गई।सर्वे के दौरान डलमेशियन पेलिकन, ग्रेट व्हाइट पेलिकन, नॉर्दर्न शोवलर, रफ, ब्लैकशोल्ड और पाइप जैसे दुर्लभ प्रवासी पक्षी भी देखे गए। विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने बताया कि ऐसे वैज्ञानिक सर्वे आर्द्रभूमियों के स्वास्थ्य और जैव विविधता को समझने में मददगार हैं। प्रो. प्रवीण माथुर के अनुसार विद्यार्थियों की भागीदारी से अभियान और प्रभावी बन रहा है। वर्तमान में 15 सदस्यीय टीम अजमेर की अन्य झीलों और तालाबों में भी गणना कर रही है।

खेजड़ी वाटिका संरक्षण

विश्वविद्यालय परिसर में स्थित चरक भवन के निकट खेजड़ी वाटिका में राज्य वृक्ष खेजड़ी का संरक्षण किया गया। संस्कृति और पर्यावरण की दृष्टि से अहम माने जाने वाले खेजड़ी के पौधों को सर्दी और पाले से सुरक्षित रखने के लिए जूट से ढका गया। खेजड़ी राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान है और यह पर्यावरण संतुलन, मृदा संरक्षण, जलवायु नियंत्रण और जैव विविधता के संरक्षण के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन ने यह नवाचार प्रारंभ किया। पर्यावरणीय चेतना, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक संरक्षण तकनीक के उपयोग का यह सुंदर उदाहरण है। यह पहल दर्शाती है कि विश्वविद्यालय केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता में ही नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

जैव विविधता हेमलेट का प्रस्ताव

डॉ. सलीम अली की 129 वीं जयंती पर आयोजित राष्ट्रीय पक्षी दिवस की संगोष्ठी में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विश्वविद्यालय को जैव विविधता हेमलेट के रूप में विकसित करने का महत्वाकांक्षी प्रस्ताव रखा। यह संगोष्ठी पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा प्राणीशास्त्र विभाग, पक्षी संरक्षण सोसायटी अजमेर एवं राजस्थान वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई थी।कुलगुरु ने कहा कि परिसर में विद्यमान हरियाली, जल स्रोत एवं छात्र सुविधाएं इस पहल के लिए पर्याप्त आधार हैं। हेमलेट की अवधारणा को न केवल विश्वविद्यालय के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए एक मॉडल उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा केंद्र सरकार के समक्ष इस संबंध में प्रस्ताव भेजने की भी घोषणा की। यह पहल विश्वविद्यालय को एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

राष्ट्रीय प्रदूषण निवारण दिवस

पर्यावरण अध्ययन विभाग में राष्ट्रीय प्रदूषण निवारण दिवस पर एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रो. प्रवीण माथुर ने प्रदूषण निवारण दिवस के महत्व और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने भोपाल गैस त्रासदी का उल्लेख करते हुए कहा कि यह दिवस हमें औद्योगिक सुरक्षा, पर्यावरणीय सतर्कता और मानवीय जीवन की रक्षा के लिए किए जाने वाले प्रयासों को और ज्यादा मजबूत करने की प्रेरणा देता है।प्रो. माथुर ने कहा कि आज जरूरत है कि हम न केवल प्रदूषण नियंत्रण की तकनीकों को अपनाएं बल्कि जागरूक नागरिक के रूप में भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें। विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने बताया कि राष्ट्रीय प्रदूषण निवारण दिवस सिर्फ एक औपचारिकता नहीं बल्कि पर्यावरणीय चेतना को सशक्त करने का माध्यम है। कार्यक्रम में डॉ. शुभ्रा सिंह, डॉ. सुमिता चौधरी, डॉ. अनीता शर्मा, रौनक चौधरी, कोमल सोगिया, कौशल रूपावत, निवेदिता शर्मा एवं पर्यावरण विज्ञान के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

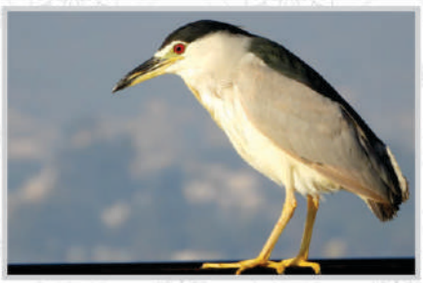

चतुर्थ खंड

खेलकूद उपलब्धियां

खेलोत्सव जयघोष का आयोजन

विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने किया। उन्होंने कहा कि खेल समग्र विकास का माध्यम हैं और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में खेलों पर विशेष बल दिया गया है। खेलों के माध्यम से न केवल शारीरिक विकास होता है, बल्कि नेतृत्व क्षमता, टीम भावना, अनुशासन और प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण का भी विकास होता है। विश्वविद्यालय परिसर के विद्यार्थियों ने विभिन्न खेलों में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

महिला हॉकी टीम पहली बार ऑल इंडिया इंटर-यूनिवर्सिटी हॉकी टूर्नामेंट के लिए रवाना

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय अजमेर की महिला हॉकी टीम ने पहली बार ऑल इंडिया इंटर-यूनिवर्सिटी हॉकी टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई कर ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। टीम ने नॉर्थ जोन इंटर-यूनिवर्सिटी चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए क्वार्टर फाइनल सहित महत्वपूर्ण मुकाबले जीते।

इस उपलब्धि पर कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने खिलाड़ियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। टीम का नेतृत्व कप्तान कोमल कर रही हैं तथा टीम में कमला, प्रिया, गायत्री, लिछमा, रुचि, आसिन, शुभम, कुमकुम, वर्षा ,प्रियंका, प्रीति, मधु, रिंकू, पूजा, रवीना, संजना सम्मिलित है।टीम के कोच डॉ. कुलदीप सिंह राजपुरा एवं टीम मैनेजर गणपती लाल गुप्ता होंगे | महिला हॉकी टीम 28 जनवरी से 2 फरवरी तक आईआईटी यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित ऑल इंडिया इंटर-यूनिवर्सिटी हॉकी टूर्नामेंट में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करेगी।

अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिताओं का व्यापक आयोजन

अंतर महाविद्यालय महिला वॉलीबाल प्रतियोगिता

विश्वविद्यालय ने नवंबर से जनवरी के बीच विभिन्न खेलों में अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया। 38वीं अंतर महाविद्यालय महिला वॉलीबाल प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि खेलकूद में खेल भावना जरूरी है। खिलाड़ियों को पूर्ण क्षमता और कौशल का प्रयोग करना चाहिए। जीवन में खेलकूद नेतृत्व क्षमता का विकास करने में सहायक है।वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा ने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ सहशैक्षणिक गतिविधियां जरूरी हैं। इससे युवाओं को आगे बढ़ने के अवसर मिलते हैं। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष ने कहा कि देश में महिलाएं एवं बालिकाएं खेलकूद में भी अग्रणी हैं। प्रतियोगिता में नारायणी देवी वर्मा महाविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय हमीरगढ़, नारायणी देवी वर्मा महिला महाविद्यालय भीलवाड़ा और सोफिया कॉलेज ने शानदार जीत की बदौलत सेमीफाइनल में जगह बनाई।

अंतर महाविद्यालय बास्केटबॉल प्रतियोगिता

38 वीं अंतर महाविद्यालय महिला बास्केटबॉल प्रतियोगिता में आठ कॉलेजों की टीमों ने भाग लिया। सेमीफाइनल में सोफिया कॉलेज अजमेर ने राजकीय कन्या महाविद्यालय को दो-शून्य से और एसएमएस कॉलेज भीलवाड़ा ने एसपीसीजी अजमेर को दो-शून्य से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मुकाबले में सोफिया कॉलेज ने लगातार पांचवीं बार खिताब अपने नाम किया।

वहीं पुरुष बास्केटबॉल प्रतियोगिता में भी रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। सेमीफाइनल में एसएमएस भीलवाड़ा ने बांगड़ गवर्नमेंट कॉलेज डीडवाना को 87-74 से हराया। पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय अजमेर ने प्रताप सिंह बारहठ गवर्नमेंट कॉलेज शाहपुरा को बयालीस-तेईस से हराया। फाइनल मुकाबला एसएमएस भीलवाड़ा और एसपीसी गवर्नमेंट कॉलेज अजमेर के बीच हुआ।

अंतर महाविद्यालय बेडमिन्टन प्रतियोगिता

बैडमिंटन प्रतियोगिता में बाईस महाविद्यालयों ने भाग लिया। महिला वर्ग में सोफिया गर्ल्स कॉलेज ने आचार्य एसएमएस कॉलेज भीलवाड़ा को दो-शून्य से हराकर लगातार पांचवीं बार खिताब अपने नाम किया। विजेता टीम को पश्चिम क्षेत्र (WestZone) प्रतियोगिता के लिए चुना गया जो सिंबायोसिस यूनिवर्सिटी पुणे में होनी है। पुरुष वर्ग में एसबीआरएम नागौर, एसटीए गंगापुर, प्राग कॉलेज विजयनगर और एसपीसी राजकीय महाविद्यालय अजमेर ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

अंतर महाविद्यालय शतरंज प्रतियोगिता

शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन पुष्कर के चौहान राजकीय महाविद्यालय में हुआ। प्रतियोगिता में अजमेर संभाग के चौबीस महाविद्यालयों के नब्बे खिलाड़ियों ने भाग लिया। छात्र वर्ग में जोसिए की टीम विजयी रही, जबकि एमएलवी महाविद्यालय भीलवाड़ा उपविजेता रहा। महिला वर्ग में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर विजेता और जोसिए उपविजेता रहा।

अंतर महाविद्यालय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता

38वीं अंतर महाविद्यालय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय के खेल स्टेडियम में हुआ। मुख्य अतिथि कमान अधिकारी ग्यारहवीं राज बटालियन एनसीसी के कर्नल अजय दाधीच थे। प्रतियोगिता में कुल नौ टीमों ने हिस्सा लिया। सेमीफाइनल में पहुंची टीमों में सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय और प्राज्ञ कॉलेज विजयनगर सम्मिलित रहे।

अंतर महाविद्यालय नेटबॉल प्रतियोगिता

नेटबॉल प्रतियोगिता सोफिया महाविद्यालय में आयोजित की गई जिसमें सात कॉलेजों ने भाग लिया। समापन समारोह की अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर सिस्टर पर्ल ने की। फाइनल में सोफिया कॉलेज अजमेर ने एसएमएस कॉलेज भीलवाड़ा को पंद्रह-नौ के अंतर से हराकर खिताब जीता।

अंतर महाविद्यालय भारोत्तोलन प्रतियोगिता

भारोत्तोलन प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के लक्ष्य ने स्वर्ण पदक जीता। विजयनगर में सम्पन्न हुई अंतर महाविद्यालय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में एक सौ दस किलो भार वर्ग में दो सौ छह किलोग्राम वजन उठाकर यह उपलब्धि प्राप्त की। विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने लक्ष्य को स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई दी।

अंतर महाविद्यालय एथलेटिक चैंपियनशिप

दयानंद महाविद्यालय में आयोजित अंतर महाविद्यालय एथलेटिक चैंपियनशिप में पचास महाविद्यालयों के पांच सौ पचास एथलीट्स ने भाग लिया। पुरुष वर्ग में दयानंद कॉलेज और महिला वर्ग में श्रीमती नारायणी देवी वर्मा महिला शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय भीलवाड़ा ने सर्वाधिक अंक प्राप्त कर चैंपियनशिप जीती। समापन समारोह की मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा रहीं।

38th Inter-College Women's Kabaddi Tournament Inaugurated at MDSU, Ajmer

BY MOHIT JAIN
AJMER, 26 SEPT

The 38th Inter-College Women's Kabaddi Tournament began today at Maharshi Dayanand Saraswati University (MDSU), Ajmer, featuring teams from nearly 24 colleges. The opening ceremony was graced by chief guests Subhash Agrawal, Director of BK Foundation, and his wife Jayshree Agrawal, while the program was presided over by the University Chancellor, Prof. Suresh Agrawal.

Addressing the participants, Subhash Agrawal praised the female athletes, calling them "Wonder Girls." He encouraged the players to remain determined and focused, citing Mount Everest climber Arunima Sinha as an example of courage and perseverance despite physical challenges. Agrawal advised the players to focus 80% on hard work and 20% on dreaming big. He also extended best wishes to the Indian cricket team for the India-Pakistan Asia Cup final, expressing confidence in their victory.

Prof. Suresh Kumar Agrawal highlighted the contributions of notable Indian women leaders, including freedom fighters like Gargi and Maitriy, urging the players to draw inspiration. He noted that the tournament is part of the university's Khelotsav Jayghosh 2025-26, organized during Navratri to promote women's empowerment.

Other dignitaries present included Acting Registrar & Finance Controller Dr. Neha Sharma, Controller of Examinations Dr. Sunil Kumar Taylor, Sports Secretary Anil Dadhich, Prof. Arvind Parik, and several university faculty and staff. The event was hosted by Dr. Raju Sharma, with a vote of thanks delivered by Prof. Sub-

Men's Inter-College Kabaddi Tournament

The 38th Men's Inter-College Kabaddi tournament concluded today with Samrat Prithviraj Chauhan Government College, Ajmer, defeating DAV College, Ajmer, 42–39 in a thrilling final to claim the championship. DAV College finished as runners-up. The winning and runner-up teams were awarded trophies, certificates, and medals by the dignitaries.

Quarter-Final Matches Scheduled for Saturday, September 27, 2025:

Vardhman College, Beawar vs. SPC GCA, Ajmer
DAV College, Ajmer vs. SMGC, Mandalgarh
RK Patni Girls College, Kishangarh vs. MDSU Campus
DAB Girls College, Beawar vs. Veer Teja, Mundwa

The tournament promises more exciting matches as teams compete for the top honors.

अंतर महाविद्यालय महिला कबड्डी के क्वार्टर फाइनल मुकाबले आज

पंचम खंड

सांस्कृतिक एवं मूल्य शिक्षा कार्यक्रम

अंतर-महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'दिग्नाद' संपन्न

28 जनवरी को विश्वविद्यालय में अंतर-महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'दिग्नाद'का भव्य शुभारंभ हुआ, जिसका उद्देश्य शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास को सशक्त करना है। चार जिलों के 360 प्रतिभागियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया | इनमें से चयनित 60 प्रतिभागियोंका विश्वविद्यालय दल आगामीवेस्ट जोन सांस्कृतिक महोत्सव आणंद (गुजरात)में प्रतिनिधित्व करेगा।

अधिष्ठाता छात्र कल्याणप्रो. सुभाष चन्द्रने बताया कि इस वर्ष अधिकाधिक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अवसर देने हेतु प्रतियोगिता को विस्तारित किया गया है। भारतीय विश्वविद्यालय संघ के निर्देशानुसार नृत्य श्रेणी मेंक्रिएटिव कोरियोग्राफीको सम्मिलित किया गया है। संगीत, नृत्य, साहित्य, रंगमंच एवं ललित कला की 27 प्रतियोगिताएंतीन दिनों तक आयोजित हुईं।

उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथिश्री गोपाल सिंह खींचीने मांड गायकी से प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथिसंभागीय आयुक्त श्री शक्ति सिंह राठौड़ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुएकुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवालने कहा कि शिक्षा माइंड, बॉडी और सोल के संतुलित विकास से ही सार्थक होती है। 'नाद ब्रह्म' की परंपरा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कला-संगीत को संस्कृति और सृजन का आधार बताया तथा रचनात्मक व आलोचनात्मक क्षमता के विकास पर बल दिया।अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता**"दिग्नाद"**के समापन समारोह मेंराजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालयके कुलगुरुप्रो त्रिभुवन शर्माने कहा कि सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ हमारी सभ्यता और आत्मा की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने युवाओं को संस्कृति और मूल्यों से जुड़कर राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवालने कहा कि संस्कृति अतीत और भविष्य को वर्तमान से जोड़ती है तथा ऐसे आयोजन युवाओं की रचनात्मकता को सशक्त बनाते हैं।विशिष्ट अतिथिगफरुद्दीन मेवातीरहे। इस अवसर पर जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग द्वारा निर्मित लघु समाचार पत्र का विमोचन भी किया गया।

वंदे मातरम् के 150 वर्ष का अमृत महोत्सव

विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर-महाविद्यालय खेल प्रतियोगिताओं के समापन अवसर पर राष्ट्रगीतवंदे *मातरम्*के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विशेष समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा, छात्र कल्याण अधिष्ठाता सुभाष जी, स्पोर्ट्स बोर्ड के अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

उद्बोधन में कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने मुख्य अतिथि की रूप मे बोलते हुए कहा कि खेल केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि मानवता और एकता की भावना को सुदृढ़ करने का माध्यम हैं। खेल भावना से प्रेरित प्रयास राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाते हैं। साथ ही उन्होने *वंदे मातरम्*को भारत की आत्मा, स्वतंत्रता चेतना और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बताते हुए इसके ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला।

विश्वविद्यालय द्वारा सप्ताहभर प्रभात फेरी, युवा संसद और पुस्तक प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। अंत में विद्यार्थियों ने राष्ट्रभाव, संस्कृति संरक्षण और विकसित भारत निर्माण हेतु सामूहिक संकल्प लिया।

जनजातीय गौरव दिवस

जनजातीय गौरव दिवस पर आयोजित समारोह में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बिरसा मुंडा को सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक चेतना का प्रतीक बताया तथा जनजातीय संस्कृति के संरक्षण पर बल दिया। मुख्य वक्ता प्रो. के. बी. अगाड़ी ने गोविंद गुरु के आंदोलन और मानगढ़ हत्याकांड को 'आदिवासी जलियांवाला बाग' बताते हुए उसके ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि आई०सी०एस०एस०आर० की डॉ. ऋचा शर्मा ने बिरसा मुंडा को संघर्ष और आत्मबल का उदाहरण बताया। कार्यक्रम में व्याख्यान एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विविधता पर चर्चा हुई।

गीता जयंती का भव्य आयोजन

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में मोक्षदा एकादशी पर आयोजित गीता जयंती समारोह में कर्म योग की आधुनिक प्रासंगिकता पर चर्चा हुई। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने गीता की वैश्विक महत्ता और समत्व योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को जीवन प्रबंधन में गीता अपनाने का संदेश दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ. स्वतंत्र कुमार शर्मा ने गीता को भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल बताते हुए कर्म योग की उपयोगिता समझाई। कुलसचिव श्री कैलाश चंद्र शर्मा ने गीता को उपनिषदों का सार बताते हुए प्रेरक रूपक प्रस्तुत किया।

संविधान दिवस का गरिमामय आयोजन

26 नवंबर को संविधान दिवस का गरिमामय आयोजन माननीय कुलाधिपतिश्री हरिभाऊ किसनराव बागडे की अध्यक्षता में किया गया | उन्होंने कहा कि संविधान को आत्मसात करने से ही विकसित भारत की संकल्पना को साकार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि संविधान हमारे लोकतंत्र की आत्मा है। 1946 से 1949 के बीच संविधान का निर्माण उस समय हुआ जब देश विभाजन, विस्थापन और गरीबी जैसी समस्याओं से गुजर रहा था।

उन्होंने संविधान सभा की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश के निर्माण में महिलाओं और समाज के सभी वर्गों का योगदान रहा है। उन्होंने अनुच्छेद 370, जम्मू-कश्मीर के पुनर्गठन, नागरिकता संशोधन अधिनियम आदि विषयों का उल्लेख करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता बनाए रखने में संविधान की महत्वपूर्ण भूमिका है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो नारायण लाल गुप्ता ने कहा कि भारतीय संविधान मूलतः सनातन परंपरा पर आधारित है | भारतीय संविधान सम्मिलित चित्रों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के चिंतन को अभिव्यक्ति प्रदान की गई |

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की तीन माह की गतिविधियों पर आधारित न्यूज लेटर ***'त्रिवेणी'*** के प्रथम संस्करण का विमोचन किया गया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि यह न्यूज लेटर विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों का दस्तावेज है। यह विश्वविद्यालय की पहचान और उपलब्धियों को दर्शाता है।

विश्वविद्यालय ने संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिलाओं के योगदान पर विशेष अभियान चलाने की घोषणा की। इसके तहत व्याख्यान, वाद-विवाद, पोस्टर प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। चौबीस जनवरी 1950 को संविधान पर हस्ताक्षर करने वाली पंद्रह महिलाओं के योगदान पर विशेष सत्र आयोजित किए जाने की योजना बनाई गई।

नशा मुक्त भारत अभियान

विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में इकाई की प्रभारी डॉ. लारा शर्मा ने नशा मुक्त रहने की शपथ दिलाई। उन्होंने बताया कि नशा जीवन के लिए हानिकारक है और इससे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने नशे से होने वाले दुष्प्रभावों और उससे बचाव के उपायों पर प्रकाश डाला। शहर के कई संस्थानों द्वारा युवाओं को नशा मुक्त करने हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस अवसर पर एनएसएस स्वयंसेवकों ने नशा मुक्त भारत का संकल्प लिया।

विश्व हिंदी दिवस

विश्व हिंदी दिवस पर हिंदी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय परिसर का शैक्षणिक भ्रमण कर प्रकृति आधारित रचनात्मक लेखन किया। विभाग प्रभारी प्रो. मोनिका भटनागर ने हिंदी को भाव-अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बताया। विद्यार्थियों ने संस्मरण, निबंध एवं आलेखों के माध्यम से अपने अनुभव प्रस्तुत किए। यह गतिविधि डॉ. नेमिचंद तम्बोली, डॉ. चंचल मेहरा एवं सरिता गौतम के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई।

षष्ठ खंड

स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम

विश्व मधुमेह दिवस कार्यक्रम

खाद्य विज्ञान एवं पोषण विभाग के तत्वावधान में विश्व मधुमेह दिवस पर शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. ऋतु माथुर ने कहा कि भारत में मधुमेह तेजी से एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बन रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और सही जीवनशैली अपनाने के साथ समाज में जागरूकता फैलाने में भूमिका निभाएं।

मुख्य वक्ता डायबिटोलॉजिस्ट डॉ. कुणाल कोहली ने मधुमेह के कारण, लक्षण, रोकथाम और उपचार के उपायों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज की जीवनशैली में अत्यधिक तनाव, जंक फूड और शारीरिक निष्क्रियता मधुमेह के प्रमुख कारण हैं। कार्यक्रम में विभाग द्वारा तैयार किए गए मधुमेह जागरूकता पैम्फलेट का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. सुभाष चन्द्रा, प्रो. भारती जैन, डॉ. जयंती देवी, डॉ. मोनिका भटनागर सहित विभाग के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कैंसर जागरूकता शिविर

धन्वंतरी आरोग्य केंद्र एवं रोटरी क्लब मेट्रो के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय परिसर में कैंसर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि कैंसर ही नहीं, कोई भी बीमारी लाइलाज नहीं होती। हमारी बदलती जीवनशैली, अनियमित दिनचर्या और असंतुलित खान-पान गंभीर रोगों की प्रमुख वजह है।

विशेषज्ञ डॉ. अजय शर्मा ने सर्वाइकल कैंसर पर पावर प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी। टीबी एवं चेस्ट विभाग के सह-आचार्य डॉ. मुकेश गोयल ने फेफड़ों के कैंसर पर प्रकाश डालते हुए कहा कि धूम्रपान और प्रदूषण इसके प्रमुख कारण हैं। शल्य चिकित्सक डॉ. अनिल के. शर्मा ने स्तन कैंसर के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह किसी भी उम्र की महिलाओं में हो सकता है और पुरुष भी इससे अछूते नहीं हैं।

रोटरी क्लब मेट्रो की अध्यक्ष डॉ. ज्योत्सना चांदवानी ने कहा कि कैंसर की समय पर पहचान, उचित परामर्श और जागरूकता इसके इलाज की पहली और सबसे आवश्यक सीढ़ी है। कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चंद्र ने स्वागत भाषण दिया। शिविर का संयोजन स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ. राजू शर्मा ने किया।

खाद्य संरक्षण पर कार्यशाला

खाद्य विज्ञान एवं पोषण विभाग द्वारा खाद्य संरक्षण विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। तीन दिनों के दौरान विद्यार्थियों को सेब जैम, अमरूद जेली, टमाटर चटनी, सॉस, केचप, अनानास एवं गाजर मुरब्बा, अदरक कैंडी, नींबू स्क्वैश, मिश्रित अचार, लहसुन-हल्दी-अदरक अचार, हरी मिर्च अचार, फ्रेश रोज सिरप, कृत्रिम सिरका, नवरत्न चटनी समेत कई प्रकार की खाद्य सामग्री तैयार करने व उनका संरक्षण करना सिखाया गया।

यूपी अलीगढ़ के इंडियन फूड प्रोडक्शन एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट के विनोद कुमार शर्मा को विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया था। विभागाध्यक्ष प्रो. ऋतु माथुर ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान के साथ स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाते हैं। वरिष्ठ शिक्षिका प्रो. भारतीजैन, डॉ. स्वाति माथुर, डॉ. साक्षी पाठक, पूनम पारिक और शिप्रा जैन ने कार्यशाला में सहयोग किया।

सप्तम खंड

सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामुदायिक कार्य

गोद लिए गांव में स्वच्छता अभियान

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर की टीम ने गोद लिए गांव नेडलिया में स्वच्छता शिविर आयोजित किया। प्रो. सुभाष चंद्र ने स्वच्छता को रोगों से बचाव और देश सेवा का माध्यम बताया। ग्रामीणों, स्टाफ व विद्यार्थियों ने स्वच्छता की शपथ ली तथा रैली के माध्यम से जागरूकता फैलाई। यह अभियान विश्वविद्यालय की सामाजिक जिम्मेदारी को दर्शाता है।

स्वदेशी कंसोर्टियम की अभिनव पहल

स्वदेशी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते वर्चस्व से निपटने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में स्वदेशी कंसोर्टियम विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षकों, अधिकारियों,शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की। कार्यशाला में "मेक इन इंडिया से आगे 'मेड बाय भारत' की सोच: स्वदेशी कंसोर्टियम" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि स्वदेशी उत्पादन, स्थानीय उद्योगों का संरक्षण और आत्मनिर्भर भारत को सशक्त करना आज की आवश्यकता है, क्योंकि विदेशी निर्भरता से आर्थिक चुनौतियाँ बढ़ रही हैं।प्रसिद्ध स्वदेशी चिंतक प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने "मेड बाय भारत" की अवधारणा पर बल देते हुए कहा कि केवल निर्माण ही नहीं, बल्कि अनुसंधान, तकनीक और लाभ भी देश में रहना चाहिए। उन्होंने कंसोर्टियम मॉडल को स्वदेशी उद्योगों को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम बताया। कार्यशाला में शिक्षाविदों, विशेषज्ञों और विद्यार्थियों ने सहभागिता की।उन्होंने कहा कि स्वदेशी अर्थव्यवस्था केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता का मार्ग है। गांधीजी के विचारों का उल्लेख करते हुए बताया कि स्थानीय स्तर पर खर्च की गई राशि यदि बार-बार स्थानीय बाजार में परिसंचरण करती है तो उसका गुणक प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है, जिससे रोजगार, उत्पादन और आय में वृद्धि होती है। इसके विपरीत विदेशी कंपनियों के उत्पादों पर खर्च किया गया धन अंततः देश से बाहर चला जाता है।

कार्यशाला का प्रमुख आकर्षण कंसोर्टियम मॉडल रहा, जिसमें विश्वविद्यालय, उद्योग, एमएसएमई, बैंक और स्थानीय उद्यम मिलकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकते हैं।कार्यशाला में निंबोली से मुरब्बा निर्माण, नीम की पत्तियों से प्राकृतिक खाद, गुलाब से गुलकंद और गुलाब जल उत्पादन, आंवले का मुरब्बा, त्रिफला, आंवला कैंडी-टॉफी, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के खिलौने, जलकुंभी से टोकरी और पर्स, स्थानीय मोटे अनाज से फूड प्रोसेसिंग यूनिट, स्थानीय परिधान-फैब्रिक-डिजाइन यूनिट, मोझड़ी-जूते, बेल्ट आदि उत्पादों के निर्माण पर विस्तृत चर्चा हुई।

अष्टम खंड

दीक्षांत समारोह

त्रयोदश दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन

25 दिसंबर 2025 को विश्वविद्यालय के त्रयोदश दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन सत्यार्थ सभागार में किया गया। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने की। दीक्षांत भाषण विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने दिया और विशिष्ट अतिथि के रूप में केबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत उपस्थित रहे।

इस दीक्षांत समारोह में कुल 1,0,4617 उपाधियां प्रदान की गईं। इनमें सेमेस्टर सिस्टम के 2172 और वार्षिक परीक्षा 2024 के 1,0,2505 विद्यार्थी सम्मिलित थे। चालीस स्वर्ण पदक प्रदान किए गए, जिनमें तैंतीस छात्राएं और सात छात्र सम्मिलित थे। दो कुलाधिपति पदक भी प्रदान किए गए। 54 शोधार्थियों को विद्यावाचस्पति उपाधि प्रदान की गई।

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ बागड़े ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि यह पावन अवसर हमारे प्राचीन भारतीय "समावर्तन संस्कार" की परंपरा का प्रतीक है, जिसमें गुरु अपने शिष्यों को शिक्षा पूर्ण होने पर सत्य, धर्म और विनम्रता का उपदेश देते थे। उन्होंने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि एक नए जीवन का प्रारंभ है। विद्यार्थियों को प्राप्त ज्ञान का उपयोग समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए करना चाहिए।माननीयराज्यपाल ने भारत के विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में युवाओं की भूमिका पर बल देते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के "विकसित भारत 2047" के संकल्प को साकार करने हेतु सभी स्नातकों से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी की अपील की। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के नामदाता महर्षि दयानंद सरस्वती ने शिक्षा को जीवन व्यवहार से जोड़ने, वेदों के पुनरुत्थान और सामाजिक सुधार के लिए जो कार्य किए वे आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि सच्ची शिक्षा का अर्थ केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि चरित्र निर्माण, अनुशासन और आत्मविकास है।

माननीयराज्यपाल ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपनी बौद्धिक क्षमता और आत्मविश्वास को बढ़ाते हुए संघ लोक सेवा आयोग व राज्य लोक सेवा आयोग जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित हों तथा प्रशासनिक सेवा के माध्यम से देशहित में योगदान दें। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में स्वच्छता, हरियाली और नैतिक वातावरण के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया तथा विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे "हर विद्यार्थी एक पेड़" अभियान के तहत पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी निभाएं।

माननीयअध्यक्ष राजस्थान विधानसभा प्रो. वासुदेव देवनानी ने दीक्षांत उद्बोधन में कहा कि यह विश्वविद्यालय महान चिंतक, वेदों के पुनरुद्धारक तथा राष्ट्रीय चेतना के निर्माता महर्षि दयानंद सरस्वती के आदर्शों पर आधारित संस्था है, जो सत्य, शिक्षा और संस्कार के मार्ग पर निरंतर प्रगति कर रही है। उन्होंने कहा कि सीमित संसाधनों और स्टाफ की कमी के बावजूद विश्वविद्यालय ने शिक्षण, अनुसंधान और सांस्कृतिक गतिविधियों के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य किया है।उन्होंने कुलाधिपति से विश्वविद्यालय में रिक्त शिक्षकीय पदों की पूर्ति हेतु आवश्यक मार्गदर्शन और अनुमति देने का आग्रह किया। उन्होंने विद्यार्थियों से आत्मविश्वास, अनुशासन, उत्कृष्टता और आजीवन सीखने की भावना बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने

कहा कि "शिक्षा केवल बुद्धि का विकास नहीं बल्कि चरित्र निर्माण का साधन है।" उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में तकनीकी दक्षता के साथ-साथ नैतिकता, सहानुभूति और भारतीय संस्कृति के मूल्यों को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रो. देवनानी ने 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में योगदान देते हुए शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की और कहा कि "भारतीय ज्ञान परंपरा और वैदिक शिक्षा" को विश्वविद्यालय में सशक्त रूप से विकसित करने के विश्वविद्यालय के उपक्रम अत्यंत सराहनीय हैं। उन्होंने नवप्रस्तावित वैदिक पार्क को एक महत्वपूर्ण पहल बताते हुए कहा कि यह विद्यार्थियों में मानसिक शांति, आध्यात्मिक संतुलन और भारतीय संस्कृति के प्रति संवेदनशीलता का भाव विकसित करेगा। उन्होंने विद्यार्थियों से यह संकल्प लेने का आह्वान किया कि "पढ़ेंगे देश के लिए, कमाएंगे देश के लिए, और जिएंगे देश के लिए।"

माननीयकेबिनेट मंत्री श्री सुरेश सिंह रावत ने अपने उद्बोधन में वैदिक परंपरा, स्वदेशी और स्वराज की भावना से प्रेरित महान विभूति महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए कहा कि उन्होंने भारत को उस समय दिशा दी जब पश्चिमी जगत सभ्यता और संस्कृति की प्रारंभिक अवस्था में था। उन्होंने समाज, शिक्षा और राष्ट्रनिर्माण को एक सूत्र में बांधकर भारत को जाग्रत किया।उन्होंने डिग्री, पदक और उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि "यह डिग्री आपके जीवन की मंजिल नहीं, बल्कि एक नया पड़ाव है।" उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे शिक्षा का उपयोग समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए करें तथा निरंतर अनुसंधान, नवाचार और तकनीकी विकास में योगदान दें। उन्होंने कहा कि भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए हमें प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा पद्धति में सामंजस्य स्थापित करना होगा।माननीयमंत्री रावत ने विश्वविद्यालय में प्रस्तावित वैदिक पार्क स्थापना योजना की सराहना करते हुए कहा कि यह पहल भारतीय संस्कृति और वैदिक ज्ञान को पुनर्जीवित करने की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगी। उन्होंने इस परियोजना के लिए अपनी ओर से विधायक निधि से आर्थिक सहयोग देने की घोषणा भी की और कहा कि वे इस संबंध में राज्य सरकार से भी सहयोग प्राप्त कराने का प्रयास करेंगे।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्ष 2024-25 में तीन लाख छियालीस हजार परीक्षार्थियों की परीक्षाएं सफलतापूर्वक आयोजित की गईं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय राज्य का पहला संस्थान है जिसने ऑन-स्क्रीन मार्किंग प्रणाली और डिजिटल लॉकर सुविधा के अंतर्गत तीस लाख से अधिक दस्तावेज अपलोड किए हैं।

उन्होंने "लीप स्कीम" और "एनहांस्ड स्टडी एनहांस्ड डेवलपमेंट" जैसी योजनाओं का उल्लेख किया जो विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में शुरू की गई हैं। उन्होंने खेल, अनुसंधान और पर्यावरण संरक्षण में विश्वविद्यालय की उपलब्धियां- एशियन योगासन चैंपियनशिप, "खेलोत्सव जयघोष", खेजड़ी उद्यान और नेट-जीरो कार्बन कैंपस आदि की चर्चा की | कुलगुरु ने बताया कि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को आगामी सत्र से पूरी तरह लागू करने को तैयार है तथा "दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ" स्थापित करने का निर्णय लिया जा चुका है | उन्होंने माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति, विधानसभा अध्यक्ष तथा मंत्री का मार्गदर्शन और सहयोग के लिए आभार प्रकट किया।

इस दीक्षांत समारोह की विशेषता रही कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा विश्वविद्यालय को दीक्षांत समारोह के लिए शुभकामना संदेश प्रेषित किया गया । उन्होंने संदेश में कहा कि दीक्षांत समारोह जीवन की नई शुरुआत का पर्व है। उन्होंने विद्यार्थियों से ज्ञान, नवाचार, तकनीक और उद्यमिता के माध्यम से विकसित भारत-2047 के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने युवाओं से कहा कि वे गांवों, कस्बों और शहरों की जरूरतों को समझते हुए स्थानीय स्तर पर रोजगार और विकास के नए अवसर तैयार करें, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनेगी।

इस दीक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक की श्रेणी में चार नए विषयों को भी सम्मिलित किया गया। अब एम.टेक (कंप्यूटर साइंस), मास्टर इन सोशल वर्क, वैदिक वांग्मय और गृह विज्ञान में भी स्वर्ण पदक प्रदान किए जाएंगे। गृह विज्ञान के विद्यार्थियों ने कुलगुरु से मिलकर यह मांग रखी थी, जिसे स्वीकार करते हुए अन्य उपर्युक्त उल्लेखित वंचित विषयों में भी पीएच० डी० देना स्वीकार किया गया | इसकी विधिवत स्वीकृति विद्या परिषद् से भी मिल चुकी है |

77वें गणतंत्र दिवस समारोह पर छात्र सम्मान

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित मुख्य समारोह में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने संविधान के मूल्यों को अपनाने और राष्ट्रनिर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए आरक्षण रोस्टर को राज्य सरकार की स्वीकृति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप अध्यादेश, कर्मचारी चयन आयोग के माध्यम से भर्ती तथा "लर्न, अर्न एंड परफॉर्म (LEaP)" योजना को महत्वपूर्ण कदम बताया।

कुलगुरु ने शोध एवं परीक्षा सुधारों, डिजिटल लर्निंग, विदेशी विश्वविद्यालयों से सहयोग, स्मार्ट क्लासरूम और एआई आधारित शोध पहलों पर भी प्रकाश डाला। समारोह में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं और पहली बार 26 जनवरी को मंच पर बुलाकर विश्वविद्यालय के होनहार विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति चेक वितरित किए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बीकानेर कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलगुरु प्रो. बी. आर. छीपा उपस्थित रहे तथा बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

नवम खंड

अवसंरचना एवं डिजिटल पहल

राजकाज ई-ऑफिस प्रणाली का क्रियान्वयन शुरू

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के निर्देश पर विश्वविद्यालय में राज्य सरकार की ई-ऑफिस योजना "राजकाज" लागू की जा रही है। इसके माध्यम से पारंपरिक फाइल सिस्टम को डिजिटल किया जाएगा, जिससे फाइल निस्तारण तेज होगा और प्रशासनिक कार्य कंप्यूटर पर सरलता से संभव होंगे। राजकाज से समय की बचत, पारदर्शिता और कार्यकुशलता बढ़ेगी।

डिजिटल लॉकर एवं दस्तावेजीकरण

विश्वविद्यालय ने डिजिटल दस्तावेजीकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। तीस लाख से अधिक दस्तावेज डिजिटल लॉकर में अपलोड किए गए हैं। 23 लाख अंकतालिकाएं और 07 लाख उपाधियां डिजिटल रूप में उपलब्ध हैं। यह राज्य का पहला विश्वविद्यालय है जिसने इतने व्यापक स्तर पर डिजिटल दस्तावेजीकरण किया है।

सोशल मीडिया पर विश्वविद्यालय

सोशल मीडिया पर 04 लाख से अधिक दर्शकों तक पहुंच बनाकर विश्वविद्यालय ने अपनी दृश्यता बढ़ाई है, जिसका सीधा प्रभाव छात्र प्रवेश में वृद्धि के रूप में देखा गया है।

छात्रावास सुविधाओं का विस्तार

विश्वविद्यालय में वर्तमान में गार्गी छात्रावास छात्राओं के लिए संचालित है। नचिकेता छात्रावास में भी छात्रों को रहने की सुविधा उपलब्ध करा दी गई है | कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि विगत दिनों विश्वविद्यालय में खेलोत्सव के दौरान नचिकेता छात्रावास में विद्यार्थियों के ठहरने का सफल प्रबंध किया गया था। छात्रावासों में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र का निर्धारित प्रारूप विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिया गया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी नियमानुसार आवेदन कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय के बंद पड़े भवनों को राज्यसरकार के सहयोग से संचालित करने की दिशा में कदम

विश्वविद्यालय के बंद पड़े अतिथि गृह अतिथि शिक्षकों, शोधार्थियों, अकादमिक आयोजनों में आने वाले विशेषज्ञों तथा विश्वविद्यालय के आधिकारिक कार्यक्रमों के उद्देश्य से किया गया था। वर्तमान में ये भवन गैर परिचालन अवस्था में हैं।इन भवनों के पुनः संचालन एवं प्रभावी उपयोग के लिए विश्वविद्यालय द्वारा राज्य सरकार के नियमों एवं प्रावधानों के अनुरूप प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। इस संदर्भ में राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय के मध्य औपचारिक समझौता होना शेष है। अंतिम निर्णय लेने से पूर्व इसे विश्वविद्यालय के प्रबंध बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत कर विधिवत अनुमोदन प्राप्त किया जाएगा।

वैदिक पार्क की महत्वाकांक्षी परियोजना

एक सौ करोड़ रुपये की लागत से प्रस्तावित वैदिक पार्क परियोजना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है। यह वैदिक ज्ञान, संस्कृति और आध्यात्मिक पर्यटन का अनूठा केंद्र बनेगा। माननीय केबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत ने इस परियोजना के लिए विधायक निधि से आर्थिक सहयोग की घोषणा की है और राज्य सरकार से भी सहयोग प्राप्त कराने का वचन दिया है। यह परियोजना न केवल शैक्षणिक शोध का केंद्र होगा बल्कि भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने में भी सहायक होगी।

दशम खंड

शैक्षणिक संगोष्ठियां एवं सम्मेलन

विद्यालयी पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय के सम्बद्ध महाविद्यालय क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर में तीन दिवसीय "विद्यालयी पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी" का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने भारतीय संस्कृति को ज्ञान आधारित बताते हुए पाठ्यचर्या व शैक्षणिक विधियों में स्वदेशी प्रणालियों के समावेशन पर जोर दिया।विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के संयुक्त निदेशक प्रो. प्रकाश चंद्र अग्रवाल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान की प्राचार्य प्रो. सुचेता प्रकाश ने कहा कि राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारतीय ज्ञान परंपरा का विद्यालयी पाठ्यक्रम में समावेशन, विभिन्न विद्यालयी विषयों में एकीकरण, इसके माध्यम से विषयों की सीमाओं से परे जाना और नीतिगत परिवर्तनों के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों पर एक सौ प्रतिभागियों के शोध-पत्रों का वाचन किया गया |

सिंधी समुदाय के योगदान पर संगोष्ठी

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की सिंधु शोध पीठ और राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद के तत्वावधान में 13 जनवरी को भारत के विकास में सिंधी समुदाय का योगदान विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि 1947 के विभाजन की पीड़ा सहने के बाद भी सिंधी समाज ने अपने पुरुषार्थ से देश की प्रगति में अप्रतिम योगदान दिया है।उन्होंने जोर दिया कि सिंधी भाषा और सनातन मूल्यों का संरक्षण ही राष्ट्र निर्माण का आधार है। कार्यक्रम में स्वामी हंसराम जी महाराज ने आह्वान किया कि समाज केवल सरकार पर निर्भर न रहे, बल्कि अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखने के लिए स्वयं एकजुट होकर विश्वविद्यालय व शोध संस्थान स्थापित करे।कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने सिंधु सभ्यता को विविधता और सह-अस्तित्व का प्रतीक बताया। इस दौरान निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं प्रकाश तेजवानी, आरती व अन्य को पुरस्कार दिया गया तथा डॉ. लाजवंती छावानी को उपनिदेशक का नियुक्ति पत्र सौंपा गया।

तकनीकी सत्र में विशेषज्ञों ने व्यापार, शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र में सिंधियों के योगदान पर शोध पत्र पढ़े। इस अवसर पर सुरेश सिंधी, प्रताप पिजानी, रेखा चेलानी, धनश्याम भगत, डॉ. दीप्ति रंगानी सहित विश्वविद्यालय कर्मचारी उपस्थित रहे।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र पर संगोष्ठी

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा आयोजित "भारतीय सौंदर्यशास्त्र का अंग्रेजी में भारतीय साहित्य के माध्यम से पुनरावलोकन" विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एमडीएस विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल थे। प्रो. अग्रवाल ने कहा कि भारतीय अंग्रेजी शिक्षा अब भी ब्रिटिश उपनिवेशवादी ढांचे पर आधारित है। उन्होंने भारतीय साहित्य, दर्शन और परंपराओं को अंग्रेजी शिक्षा में समाहित करने वाले शैक्षिक सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

मदस विवि में कर्तव्य बोध पर हुआ विशेष व्याख्यान

शिक्षक का कर्तव्य पढ़ाना ही नहीं राष्ट्र निर्माण भी

एकादश खंड

विशेष व्याख्यान, मूल्य शिक्षा एवं सम्मान

कर्तव्य बोध पर प्रेरक व्याख्यान

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की विश्वविद्यालय इकाई द्वारा कर्तव्य बोध विषय पर एक प्रेरक व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ. अशोक कलवार ने भारतीय इतिहास के महान व्यक्तित्वों के कर्तव्य बोध के उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने चाणक्य के तक्षशिला में शिक्षा ग्रहण करने और सिकंदर के आक्रमण से देश की रक्षा करने, भगवान राम के चौदह वर्ष के वनवास के दौरान समाज के कल्याण के लिए किए गए कार्यों का उल्लेख किया।

महाभारत की गीता को कर्तव्य बोध का सर्वोत्तम उदाहरण बताते हुए कहा गया कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्तव्य पथ पर लाने के लिए अठारह अध्यायों का ज्ञान दिया। छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, गुरु गोविंद सिंह, पृथ्वीराज चौहान और सुभाष चंद्र बोस के बलिदान और कर्तव्यनिष्ठा का विस्तार से वर्णन किया गया। गुरु तेग बहादुर के बलिदान और उनके पुत्रों की शहादत को धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए सर्वोच्च त्याग बताया गया।पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा काशी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों का उल्लेख करते हुए बताया गया कि कैसे उन्होंने भिक्षा मांगकर भी इस महान शैक्षणिक संस्थान का निर्माण किया। डॉ. कलवार ने शिक्षकों से कहा कि उनका कर्तव्य केवल कक्षा में पढ़ाना नहीं है, बल्कि व्यक्ति निर्माण और राष्ट्र निर्माण करना है। विद्यार्थियों की समस्याओं को समझना और उनका समाधान करना शिक्षक का दायित्व है।विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। अनुसंधान और नवाचार में रुचि लेकर देश के विकास में योगदान देना चाहिए। उन्होंने वर्तमान चुनौतियों के रूप में युवाओं में बढ़ते अवसाद, चारित्रिक पतन, नशे की लत और मोबाइल की लत जैसी समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया। पिछले वर्ष तीन सौ पचास मेडिकल छात्रों द्वारा आत्महत्या के आंकड़े साझा करते हुए चिंता व्यक्त की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि कर्तव्यनिष्ठा का जीवंत उदाहरण डॉ. कलवार ने स्वयं प्रस्तुत किया है । कैंसर विशेषज्ञ होने के नाते निजी प्रैक्टिस में अधिक आय का विकल्प छोड़कर उन्होंने देशसेवा का मार्ग चुना, जो स्वयं में कर्तव्यनिष्ठा का प्रेरक उदाहरण है।

शिक्षा से स्वावलंबन की ओर: कुलगुरु प्रो. सुरेश अग्रवाल का प्रेरक संदेश

राजकीय महाविद्यालय किशनगढ़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश अग्रवाल ने विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों की भूमिका, शिक्षा के उद्देश्य तथा विद्यार्थियों के मार्गदर्शन पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय केवल संबद्धता प्रदान करने वाला संस्थान नहीं, बल्कि विचारों की प्रयोगशाला, नवाचार का केंद्र और चरित्र निर्माण का तीर्थ है।

कुलगुरु ने विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के संबंध को शरीर और आत्मा की उपमा देते हुए पारस्परिक सहयोग को विकास की कुंजी बताया। उन्होंने आधुनिक शिक्षा के चार स्तंभ—शिक्षा के साथ कौशल, राष्ट्र निर्माण, समाज निर्माण और

आदर्श स्थापना—पर बल दिया तथा 90 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को शिक्षा से स्वावलंबन की यात्रा कहा।विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने स्वावलंबी बनने का संदेश दिया और महिला शिक्षा व कौशल विकास को आत्मनिर्भर भारत का आधार बताया। अंत में उन्होंने विश्वविद्यालय की ओर से संबद्ध महाविद्यालयों को पूर्ण सहयोग और निरंतर मार्गदर्शन की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) का एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उद्बोधन

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय के महात्मा गांधी सभागार में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) का एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन देशभक्ति और सामाजिक सेवा की भावना से युवाओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय कुलगुरु प्रो. सुरेश अग्रवाल ने अपने संबोधन में पर्यावरण संरक्षण पर बल देते हुए कहा कि मानव को प्रकृति का संरक्षक बनकर कार्य करना चाहिए।

कार्यशाला में राज्य समन्वयक कृष्ण कुमार कुमावत ने एनएसएस की गतिविधियों पर जानकारी दी, जबकि सीटीडीआई जयपुर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रघुवीर सिंह ने साइबर अपराध और नागरिक अधिकारों पर जागरूक किया। राजनंदन चौधरी ने नशामुक्ति पर प्रेरक व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. मनोज बहारवाल ने की। लगभग 200 स्वयंसेवकों की सहभागिता से आयोजित यह कार्यशाला युवाओं में सेवा, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने में सफल रही।

NSIEL- 2026 की प्री-समिट बैठक में कुलगुरु का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन

राष्ट्रीय संस्थागत नेतृत्व शिखर सम्मेलन (NSIEL) 2026 की प्री-समिट बैठक दिनांक 17 जनवरी 2026 को महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंसेज, जयपुर में आयोजित की गई। यह शिखर सम्मेलन 16-17 फरवरी 2026 को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर (RIC), जयपुर में आयोजित होगा, जिसके मुख्य आयोजक विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यालय, राजस्थान सरकार (उच्च शिक्षा विभाग) एवं आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान हैं। प्री-समिट बैठक में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विशेष रूप से सहभागिता करते हुए पाठ्यक्रम परिवर्तन को भारतीय संदर्भों में विशिष्ट बनाने पर बल दिया। उन्होंने भारतीय ज्ञान प्रणाली को प्रत्येक पाठ्यक्रम की इकाइयों में समाहित करने की आवश्यकता पर बल दिया |

पत्रकारिता एवं आर्थिक राष्ट्रवाद पर व्याख्यान

राजस्थान पत्रिका द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान में "की नोट स्पीकर" के रूप में बोलते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं है, यह व्यक्ति की संवेदना और संस्कारों को जोड़ने का माध्यम है। पत्रकारिता वह वृक्ष है जिससे समाज को दिशा और दशा मिलती है। उन्होंने कहा कि आज आर्थिक राष्ट्रवाद और तकनीकी देशभक्ति की आवश्यकता है। सरकार, उद्योगों और मीडिया के सहयोग से आर्थिक विकास तेज हो सकता है। राष्ट्र प्रथम और बाकी बाद में की सोच बढ़ने की आवश्यकता है।

संगम विश्वविद्यालय भीलवाडा में विशेष व्याख्यान

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के माननीय कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा (राजस्थान) में आईसीएसएसआर (ICSSR) प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी *"Resilient Management Practices for Making India a Viksit Bharat @2047"* के उद्घाटन सत्र में *विशिष्ट अतिथि (Distinguished Guest)* के रूप में सहभागिता करते हुए अपने विचार साझा किए।

दिनांक 23 जनवरी 2026 को आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में माननीय कुलगुरु महोदय ने *विकसित भारत @2047* के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रबंधन शिक्षा, नवाचार, सुशासन तथा अकादमिक नेतृत्व की भूमिका पर प्रेरणादायी संबोधन दिया। उन्होंने कहा कि मजबूत शैक्षणिक ढांचा, गुणवत्तापूर्ण प्रबंधन शिक्षा और नवाचार आधारित सोच ही देश को दीर्घकालीन विकास के पथ पर अग्रसर कर सकती है।

विशेष अंक 'अग्रसर' का भव्य विमोचन

अग्रवाल समाज चेतना समिति, बीकानेर के गरिमामय मंच पर 26 जनवरी 2026 को एक गौरवपूर्ण अवसर साक्षी बना, जब माननीय कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा विशेष अंक 'अग्रसर' का औपचारिक विमोचन किया गया।यह विशेषांक समाज की चेतना, प्रगति और सांस्कृतिक मूल्यों को सशक्त रूप से प्रस्तुत करता है।ऐसे आयोजनों से न केवल सामाजिक एकता को बल मिलता है, बल्कि नई पीढ़ी को सकारात्मक दिशा और प्रेरणा भी प्राप्त होती है।इस ऐतिहासिक पहल के लिए ग्रैंड अग्रवाल समाज चेतना समिति, बीकानेर को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।'अग्रसर' निश्चित ही समाज को नई सोच और नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

प्रबुद्ध सेवा संस्थान द्वारा 6 दिसम्बर 2025 को आयोजित डॉ भीमराव अंबेडकर पर आयोजित व्याख्यान

राजस्थान ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट फाउंडेशन द्वारा 6 दिसम्बर 2025 को अजमेर में आयोजित डॉ भीमराव अंबेडकर पर आयोजित व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे और उनके आर्थिक-सामाजिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं | उन्होंने संविधान निर्माण के साथ-साथ संघीय वित्तीय ढांचे, मुद्रा स्थिरता, कृषि सुधार, औद्योगिकीकरण, महिला अधिकार, जल-विद्युत एवं बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आंबेडकर ने सामाजिक न्याय को आर्थिक अवसरों से जोड़ते हुए समावेशी और संतुलित विकास की अवधारणा प्रस्तुत की। प्रो अग्रवाल ने कहा कि शोध कार्य समाज की समकालीन समस्याओं से जुड़ा होना चाहिए। डॉ अम्बेडकर के विचार आज भी विकसित, सुरक्षित, समतामूलक और सशक्त भारत के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हैं तथा नई पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान करते हैं।

21 जनवरी को लोकभवन जयपुर में राज्य वित्त पोषित कुलगुरु समन्वय समिति की आयोजित बैठक में सहभागिता

माननीय कुलगुरु महोदय प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा विगत 21 जनवरी को लोक भवन में आयोजित राज्य वित्त पोषित कुलगुरु समन्वय समिति की आयोजित बैठक में सहभागिता की गई तथा उनके इस महत्वपूर्ण विचार कि राज्य के समस्त

विश्वविद्यालयों में रिक्त पदों पर राजस्थान अधीनस्थ कर्मचारी चयन बोर्ड के माध्यम से नियुक्तियां की जानी चाहिए| इस पर माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय द्वारा राज्य सरकार को इस विचार पर अविलम्ब कार्यवाही किये जाने के निर्देश प्रदान किये गये |

राजकीय कन्या महाविद्यालय किशनगढ़ में आयोजित वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उद्बोधन

राजकीय कन्या महाविद्यालय किशनगढ़ में आयोजित वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ, जिसमें छात्राओं, शिक्षकों और अभिभावकों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही। मुख्य अतिथि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह दिन प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि का प्रतीक है। उन्होंने कहा, "बेटियाँ केवल राष्ट्र की आशा नहीं, उसका भविष्य हैं।" उन्होंने जोर देकर कहा कि जब एक बेटी शिक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर बनती है तो दो परिवारों के साथ समाज और राष्ट्र भी सशक्त होते हैं। कुलगुरु ने बेटियों की संवेदनशीलता और समावेशिता को समाज निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए परिवारों में बढ़ते विघटन को रोकने और सामाजिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया तथा महाविद्यालय के शिक्षण वातावरण की सराहना की। समारोह में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो सी पी पोखरना सहित अनेक गन मान्य व्यक्ति उपस्थित थे |

बीकानेर में कर्त्तव्य बोध दिवस पर उद्बोधन

माननीय कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा 31 जनवरी को डूंगर महाविद्यालय बीकानेर इकाई द्वारा आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस पर मुख्य वक्ता के रूप में भागीदारी की गई। कुलगुरु ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा की कर्त्तव्य एवं अधिकार साथ-साथ चलते हैं।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय अजमेर में संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विशेष व्याख्यान

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय अजमेर में संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विशेष व्याख्यान देते हुए कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि भारतीय संविधान में निहित मौलिक अधिकार केवल पश्चिमी उदारवादी विचारों की नकल नहीं हैं, बल्कि भारतीय, विशेषतः सनातन दार्शनिक परंपरा की उस अवधारणा का आधुनिक रूप हैं, जहाँ अधिकार और कर्तव्य एक-दूसरे से अविभाज्य माने जाते हैं। भारतीय चिंतन में अधिकार व्यक्तिगत दावे नहीं, बल्कि धर्म, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित अधिकारिता हैं। संविधान की मूल प्रति में राम, सीता और लक्ष्मण के अयोध्या आगमन का चित्र इस तथ्य का प्रतीक है कि अधिकारों की प्राप्ति धर्मपालन, त्याग और कर्तव्यनिष्ठ आचरण से जुड़ी है। भारतीय परंपरा में राम और भरत के आदर्श उदाहरण दिखाते हैं कि कर्तव्य कई बार अधिकार से भी ऊपर रखा जाता है। अतः संविधान की सफलता केवल कानूनी प्रावधानों से नहीं, बल्कि नागरिकों की कर्तव्यनिष्ठ, नैतिक और जिम्मेदार सहभागिता से सुनिश्चित होती है। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो मनोज कुमार बहरवाल एवं सहायक निदेशक प्रो अनिल दाधीच उपस्थित थे |

द्वादश खंड
मीडिया एवं फोटो गेलेरी

अभिमुखीकरण कार्यक्रम

विश्वविद्यालय में शोध पाठ्यचर्या कार्यक्रम

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत आयोजन

गांव की बेटी समृद्ध बेटी योजना

रतनलाल कंवर पाटनी राजकीय महाविद्यालय किशनगढ़ में आयोजित स्वरोजगार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल

संविधान दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
संविधान दिवस समारोह

संविधान दिवस समारोह

संविधान दिवस समारोह

त्रयोदश दीक्षान्त समारोह

राष्ट्रीय संगोष्ठी - भारत के विकास में सिन्धी समुदाय का योगदान

गणतंत्र दिवस समारोह

कर्त्तव्य बोध दिवस

'दिग्नाद' : अंतर-महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2026

विश्वविद्यालय समाचार पत्रों में

दैनिक भास्कर | अजमेर | अजमेर, शुक्रवार, 26 दिसंबर, 2025 | 2

एमडीएस यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह को संबोधित करते कुलाधिपति व राज्यपाल बागड़े

एमडीएसयू का 13वां दीक्षांत समारोह • मंच से युवाओं को राष्ट्रनिर्माण का आह्वान, दो चांसलर मेडल, 40 गोल्ड मेडल ओर 54 पीएचडी डिग्रियों का वितरण

सच्ची शिक्षा चरित्र निर्माण, आत्म विकास और अनुशासन से ज़ुड़ी होती हैः बागड़े

अजमेर| एमडीएस यूनिवर्सिटी अजमेर के 13वें दीक्षांत समारोह में राष्ट्रनिर्माण, भारतीय ज्ञान परंपरा और युवाओं की भूमिका केंद्र में रही। समारोह की अध्यक्षता करते हुए राज्यपाल और कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का समापन नहीं, बल्कि जीवन और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की नई शुरुआत है। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रधानमंत्री के विकसित भारत 2047 संकल्प को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया।

सुबह 11 बजे शुरू हुए दीक्षांत समारोह में दो चांसलर मेडल, 40 गोल्ड मेडल और 54 पीएचडी डिग्रियों का वितरण किया गया। साथ ही 1 लाख 4 हजार 677 डिग्रियों के वितरण करने की घोषणा की। अपने उद्बोधन में राज्यपाल और कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने समावर्तन संस्कार की परंपरा का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि सच्ची शिक्षा चरित्र निर्माण, अनुशासन और आत्म विकास से जुड़ी होती है।

उन्होंने युवाओं को यूपीएससी और आरपीएससी जैसी परीक्षाओं के जरिए प्रशासनिक सेवाओं में जाकर देशसेवा करने के लिए प्रेरित किया। दीक्षांत भाषण में राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने यूनिवर्सिटी में शिक्षकों और कर्मचारियों की कमी का मुद्दा उठाया। उन्होंने कुलाधिपति से शीघ्र नियुक्तियों के लिए मार्ग दर्शन ओर मंजूरी देने का आग्रह भी किया। उन्होंने कहा कि सीमित संसाधनों के बावजूद एमडीएसयू ने शिक्षण, शोध और संस्कृति के क्षेत्र में सराहनीय काम किया है।

एआई के युग में तकनीकी दक्षता के साथ नैतिकता और भारतीय मूल्यों को बनाए रखने पर उन्होंने बल दिया। विशिष्ट अतिथि जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने वैदिक परंपरा और आधुनिक नवाचार के समन्वय की आवश्यकता बताते हुए प्रस्तावित वैदिक पार्क को भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। उन्होंने वैदिक पार्क के लिए विधायक निधि से आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की। इससे पहले कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2024-25 में 3.46 लाख परीक्षार्थियों की परीक्षाएं आयोजित की गई, 54 शोधार्थियों को पीएचडी उपाधि और 40 गोल्ड मेडल दिए गए। यूनिवर्सिटी ने ऑन स्क्रीन मार्किंग ओर डिजिटल लॉकर में 30 लाख से ज्यादा दस्तावेज अपलोड कर डिजिटल शिक्षा में नई पहचान बनाई है। कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी के अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारी और खासी तादाद में विद्यार्थी मौजूद थे।

अतिथियों ने नहीं पहनाए... खुद मेडल पहन कर मंच पर आए विद्यार्थी

दीक्षांत समारोह में इस बार अतिथियों द्वारा विद्यार्थियों को मेडल नहीं पहनाए गए। संकायवार विद्यार्थियों को मंच के दाहिने से अतिथियों तक जाना था। मंच की सीढ़ियां चढ़ते ही पहले विद्यार्थियों को उनके गोल्ड मेडल दे दिए गए। जिन्हे विद्यार्थियों ने खुद पहना, उनके हाथ में डिग्रियां भी दे दी गई जिसे लेकर वह अतिथियों के पास गए। अतिथियों के साथ फोटो खिंचने के बाद विद्यार्थी मंच के दूसरी तरफ से नीचे उतर गए।

पिछली गलतियों के कारण, दीक्षांत में उठा स्टाफ की कमी का मुद्दा

दीक्षांत समारोह इस बार परंपराओं को बदलने वाला साबित हुआ। इसमें यूनिवर्सिटी की डिमांड भी दीक्षांत के मंच से पहली बार गूंजी तो अध्यक्षीय भाषण के बाद डिग्री और मेडल वितरण भी हुआ। शोभायात्रा की राह भी बदली गई और विद्यार्थी खुद ही मेडल और डिग्री लेकर मंच पर पहुंचे। शिक्षकों की कमी का दर्द पिछली बार की गलतियों के कारण दीक्षांत के मंच पर आया। इसके लिए विधानसभा अध्यक्ष को भी कुलाधिपति से आग्रह करना पड़ा। दरअस्ल 46 शिक्षकों वाली यूनिवर्सिटी महज 8 शिक्षकों तक सिमट चुकी है। शिक्षकों की भर्ती में सबसे बड़ी गलती तत्कालीन कुलपति प्रोफेसर आरपी सिंह ने की थी। 20 शिक्षकों की भर्ती के प्रस्ताव को राज्य सरकार से मंजूरी मिलने के बाद भी यह भर्ती नहीं हो पाई। इस प्रस्ताव में खुद तत्कालीन यूनिवर्सिटी प्रशासन ने यह कहते हुए अपने हाथ कटा लिए थे नए भर्ती किए जाने वाले शिक्षकों का वित्तीय भार यूनिवर्सिटी खुद वहन करेगी। अंदरखाने इसका विरोध शुरू हुआ और मामला कोर्ट में जाकर अटक गया था। वीसी बदले तो इस प्रस्ताव को विड्रॉ कर लिया गया। लेकिन नए प्रस्ताव भेजने में देरी की गई। हालांकि वीसी प्रो. अग्रवाल के बाद नए सिरे से भर्ती के लिए प्रस्ताव भेजे गए हैं। यही दर्द दीक्षांत में पहले वीसी बाद में स्पीकर देवनानी ने भी बयान किया। उन्होंने राज्यपाल और कुलाधिपति को यह विश्वास भी दिलाया कि संसाधनों की कमी पुष्कर विधायक सुरेश रावत और वह खुद पूरी कराने में मदद करेंगे, लेकिन शिक्षकों की कमी दूर करने के लिए कुलाधिपति को मंजूरी दिलाकर मदद करना होगी।

एमडीएसयू की डिग्री में पहले से 13 सिक्योरिटी फीचर, बार कोड भी... कुछ नया होगा तो जोड़ेंगे

आरपीएससी के सुझाव के बाद राज्य सरकार ने फर्जी डिग्रियों और दस्तावेजों की पहचान के लिए प्रदेश की सभी प्राइवेट और स्टेट यूनिवर्सिटी डिग्री, डिप्लोमा, मार्कशीट और माइग्रेशन सर्टिफिकेट में क्यूआर कोड डालने के निर्देश दिए हैं। एमडीएसयू अजमेर इस मामले में पहले से ही अपनी डिग्रियों को सिक्योर कर चुका है। यूनिवर्सिटी की डिग्री में पहले से ही 13 सिक्योरिटी फीचर मौजूद है, जिसमें बार कोड भी शामिल है। परीक्षा विभाग के मुताबिक राज्य सरकार जिस क्यूआर कोड के निर्देश दे रहा है। उसमें अगर कुछ नया होगा तो एमडीएसयू की डिग्री में जोड़ दिया जाएगा। नहीं तो डिग्री में पहले से ही यह सुविधा दी हुई है। राज्य सरकार ने निर्देश जारी किए हैं कि सभी यूनिवर्सिटी अपनी डिग्री और अन्य परीक्षा संबंधित दस्तावेज में क्यूआर कोड जोड़ना होगा। जिसे स्कैन करते ही अभ्यर्थी का सारा रिकॉर्ड सामने आ जाए और यूनिवर्सिटी के डेटाबेस से मिलान किया जा सके। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके टेलर के मुताबिक एमडीएस यूनिवर्सिटी की डिग्री में यह सिक्योरिटी फीचर पहले से है। कुल 13 सिक्योरिटी फीचर के साथ एमडीएसयू की डिग्री प्रदेश में सबसे ज्यादा सुरक्षित डिग्रियों में शामिल है।

दो साल पहले 10 फीचर और बढ़ाने का किया था दावा| दो साल पहले एमडीएसयू ने सिक्योरिटी फीचर 13 से 23 तक करने का दावा था। 10 नए फीचर जोड़ने की बात कही गई थी जिसमें एक दावा यह भी किया गया था कि राजस्थान यूनिवर्सिटी की तर्ज पर चिप लगाई जाएगी। लेकिन जब पता चला था कि जिस सिक्योरिटी फीचर की बात आरयू की तर्ज पर की जा रही है, ऐसा फीचर आरयू की डिग्री में है ही नहीं। इसके बाद 10 फीचर बढ़ाने का दावा वापस लेना पड़ा था। बाकायदा 26 सितंबर 2023 को बॉम की बैठक में प्रस्ताव पास भी कर दिया गया। बैठक के मिनिट्स जारी होने के बाद एमडीएसयू की डिग्री शाखा ने आरयू में चिप के बारे में जानकारी ली तो पता चला कि ऐसी कोई चिप डिग्री में नहीं लगाई गई है।

www.samacharjagat.com
जयपुर, 23 दिसम्बर, 2025
प्रादेशिक जगत
अजमेर, कोटा, जोधपुर, उदयपुर, भीलवाड़ा, सीकर, बीकानेर, अलवर, भरतपुर, टोंक, दौसा, सवाईमाधोपुर से एक साथ प्रसारित
3

शिक्षक बहुविषयक दृष्टिकोण से शोध को समाजोन्मुखी बनाएं

समाचार जगत ब्यूरो

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेशकुमार अग्रवाल ने कहा कि शिक्षकों को बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाते हुए अनुसंधान को समाजोन्मुख दिशा प्रदान करनी चाहिए। प्रो.अग्रवाल सोमवार को महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर स्थित यूजीसी मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग सेंटर तथा रतनलाल कांवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज किशनगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः अनुसंधान व विकास विषय पर ऑनलाइन आयोजित उन्मुखीकरण व संवेदनशील कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में बतौर अध्यक्ष कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे । प्रो. अग्रवाल ने नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधान पारिस्थितिकी को सुदृढ़ बनाने के महत्व को रेखांकित किया । यह कार्यक्रम आगामी 29 दिसंबर तक जारी रहेगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में अध्यक्ष गवर्निंग बोर्ड यूनेस्को एमजी आईडीपी व सदस्य, उच्च स्तरीय समिति भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने वैश्विक व्यापार परिदृश्य, मुक्त व्यापार समझौते, आर्थिक वैश्वीकरण तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर अपने विचार व्यक्त किए (शर्मा ने कहा कि अनुसंधान क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग से भारत की भूमिका मजबूत होगी।शर्मा ने कहा कि यूजीसी एमएमटीटीसी योजना के अंतर्गत आगामी 31 मार्च, 2026 तक लगभग 3500 शिक्षकों व शोधार्थियों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस दौरान सामाजिक विज्ञान और मानविकी के अनुसंधान पर भी विशेष चर्चा हुई (कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. रुचि मिश्रा कार्यक्रम संयोजक द्वारा अतिथियों के स्वागत के साथ हुआ। आयोजन में देश भर से 200 से अधिक शिक्षक व शोधार्थियों ने इस कार्यक्रम में ऑनलाइन अपनी भागीदारी निभाई। उद्घाटन सत्र में प्रो. शिव प्रसाद, निदेशक , यूजीसी मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग सेंटर ने स्वागत उद्बोधन देते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की । कार्यक्रम का समय 29 दिसंबर तक प्रतिदिन दोपहर 2:30 बजे से 5 बजे तक रहेगा। उन्होंने कहा कि यह आयोजन शिक्षकों में अनुसंधान व नवाचार की भावनाओं को प्रोत्साहित करेगा। आयोजन के प्रथम दिन राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में प्रो. राजुल भार्गव ने बिल्डिंग ए रिसर्च कल्चर इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन तथा सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय अजमेर के प्रो. नारायणलाल गुप्ता ने एनईपीः विजन फॉर रिसर्च एंड इनोवेशन विषय पर अपने विचार रखें । प्रथम दिन के समापन पर डॉक्टर रुचि मिश्रा ने अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

पत्रिका

अजमेर शहर 26-12-2025 07:42

मदस विश्वविद्यालय का 13 वां दीक्षान्त समारोह, राज्यपाल ने बांटे 40 स्वर्ण पदक

नहीं रहें एक डिग्री के भरोसे, सफलता के लिए मल्टी टेलेंट जरूरी- बागडे

राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ किसनराव बागडे ने किया संबोधित

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

राज्यपाल ने दी सीख

पीछे रहने वाले क्या करेंगे भला...

शिक्षकों की भर्तियां जरूरी : देवनानी

करेंगे विश्वविद्यालय का विकास

पहले भाषण, फिर बांटूंगा मेडल-डिग्री

सभागार तक पहुंची शोभायात्रा

यह रहे मौजूद

भारत को लूटा अंग्रेजों ने

SOPHIA COLLEGE WINS FIFTH STRAIGHT BADMINTON TITLE

Sophia College Reigns in Women's Badminton

BY: MOHIT JAIN
AJMER, 22 DEC

The 38th Inter-College Women's Badminton Tournament, organised under Khelo Utsav Jaighosh 2025–26 by Maharshi Dayanand Saraswati (MDS) University, Ajmer, concluded successfully at the indoor badminton court of Eklavya Bhawan. The three-day sporting event witnessed enthusiastic participation from 22 college teams representing various institutions affiliated with the university, reflecting growing interest in women's sports.

The tournament concluded with an exciting final match held on Monday between Sophia College, Ajmer and Acharya SMM College, Bhilwara. Demonstrating excellent coordination, skill and confidence, the Sophia College team dominated the match and secured a 2–0 straight-set victory, clinching the championship title. With this triumph, Sophia College achieved a remarkable feat by winning the Inter-College Women's Badminton Trophy for the fifth consecutive year, reinforcing its reputation as a powerhouse in women's badminton.

The valedictory ceremony was presided over by Dean of Student Welfare Prof. Subhash Chandra, who congratulated both the champion and runner-up teams for their dedication, discipline and sportsmanship. He encouraged the players to maintain the same spirit and wished them success for the West Zone Badminton Tournament, scheduled to be held at Symbiosis University, Pune.

Several university officials were present at the closing ceremony, including Dr. Shahina Sherani, supervisor Dr. Kuldeep Singh, and Sports Secretary Dr. Tapeshwar Kumar. The winning and runner-up teams were honoured with trophies and medals. Speakers praised the athletes' competitive spirit and emphasised the importance of sports in holistic development and empowerment of women students.

अजमेर अजमेर, शुक्रवार, 26 दिसम्बर, 2025 **दैनिक नवज**

दीक्षांत समारोह : कुलगुरु ने प्रस्तुत किया वार्षिक प्रतिवेदन

अजमेर। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में गुरुवार को आयोजित दीक्षांत समारोह में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि वर्ष 2024-25 में 3.46 लाख परीक्षार्थियों की परीक्षाएं आयोजित की गईं। समारोह में 54 शोधार्थियों को विद्या वाचस्पति उपाधि तथा 40 स्वर्ण पदक प्रदान किए जा रहे हैं तथा दो कुलाधिपति पदक भी दिए जा रहे हैं। कुलगुरु ने बताया कि विश्वविद्यालय राज्य का पहला संस्थान है जिसने ऑन स्क्रीन मार्किंग प्रणाली और डिजीटल लॉकर सुविधा के अंतर्गत 30 लाख से अधिक दस्तावेज अपलोड किए हैं। लीप स्कीम और एनहांस डेवलपमेंट प्लान जैसी योजनाएं विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में शुरू की गई है। खेल, अनुसंधान और पर्यावरण संरक्षण में विश्वविद्यालय ने उपलब्धियां हासिल की है। एशियन योगासन चैम्पियनशिप, खेलोत्सव जयघोष, खोजड़ी उद्यान और नेट-जीरो कार्बन कैम्पस की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया। कुलगुरु ने बताया कि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को आगामी सत्र से पूरी तरह लागू करने को तैयार है। दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ एवं वैदिक पार्क (100 करोड़ परियोजना) जैसी योजनाओं पर कार्य आरम्भ हो चुका है।

दीक्षांत समारोह में पदक प्रदान करते राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े। साथ हैं विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, कैबिनेट मंत्री सुरेश रावत व कुलगुरु प्रो.सुरेश कुमार अग्रवाल। -नवज्योति

पहले भाषण, फिर डिग्रियां और पदक

कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल के स्वागत और भाषण के बाद जब कुलसचिव कैलाश चंद शर्मा ने कुलाधिपति से पदक एवं डिग्री वितरण का अनुरोध किया तो कुलाधिपति ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने कहा कि पहले सभी का भाषण हो जाने दो। इसके बाद पदक एवं डिग्री वितरित की जाएगी। बाद में अपने भाषण के दौरान कुलाधिपति ने कहा कि कुछ दिन पहले उदयपुर के एक विश्वविद्यालय में पदक वितरण के दौरान यह सामने आया था कि विद्यार्थी पदक और डिग्री लेने के बाद हॉल से बाहर चले गए। इस कारण भाषण के दौरान कुर्सियां खाली पड़ी रहीं। इसलिए उन्होंने यहां पहले भाषण कराने और बाद में पदक व डिग्री वितरण करने की बात कही।

कई चुनौतियों से जूझ रहा है विश्वविद्यालय

कुलगुरु अग्रवाल ने विश्वविद्यालय में शिक्षकों एवं कार्मिकों की कमी का मुद्दा भी उठाया। शिक्षकों के 80 प्रतिशत से अधिक और कर्मचारियों के 70 प्रतिशत से अधिक पद रिक्त है। विश्वविद्यालय की भूमि पर अतिक्रमण भी एक बड़ी समस्या है। नेक ग्रेडिंग का कार्य वर्ष 2022 से लम्बित है।

42 स्वर्ण पदक, 54 पीएचडी सहित एक लाख से अधिक डिग्रियों का हुआ वितरण

दीक्षांत समारोह में वर्ष 2024-25 के लिए कुल 1 लाख 4 हजार 677 सफल परीक्षार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं। जिसमें ग्रेस पास सेमेस्टर सिस्टम के 2172 तथा वार्षिक परीक्षा 2024 के तहत 1 लाख 2 हजार 505 विद्यार्थी सम्मिलित हैं। विश्वविद्यालय द्वारा 54 शोधार्थियों को पीएच.डी. (विद्या वाचस्पति) की उपाधि प्रदान की गई। साथ ही कुल 40 स्वर्ण पदक दिए गए। इनमें 7 छात्र व 33 छात्राएं शामिल हैं। इसके अतिरिक्त कुलाधिपति पदक विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय की 2 छात्राओं को दिए गए।

विद्या वाचस्पति की 54 उपाधियां दीं

दीक्षांत समारोह में राज्यपाल के हाथों 54 शोधार्थियों को विद्या वाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई। इनमें कला संकाय के 13 शोधार्थियों, समाज विज्ञान संकाय के 12 शोधार्थियों, विज्ञान संकाय के 19 शोधार्थियों, वाणिज्य संकाय के तीन शोधार्थियों, प्रबंध अध्ययन संकाय के एक शोधार्थी, विधि संकाय के तीन शोधार्थियों, शिक्षा संकाय के दो शोधार्थियों एवं ललित कला संकाय के एक शोधार्थी को विद्या वाचस्पति की उपाधि दी गई।

इन्हें मिले गोल्ड मेडल

कला संकाय में जयश्री जैन, रामराज बेरा, शालिनी शर्मा, कृष्णा सोनी, मनीषा बिनदानी, शहला परवीन, तमन्ना खत्री को, ललित कला संकाय में विक्रम व कविता देवी को, समाज विज्ञान संकाय में वास्मीन बानो, संगीता रावत, सरोज काला, महिपाल सिंह, हनुमान प्रसाद सैनी, पूजा साहू को, वाणिज्य संकाय में शुभम परसोया, हर्षिता राजानी, सोनाली वर्मा को, विज्ञान संकाय में प्राची शर्मा, आकांक्षा शर्मा, पिंकी शर्मा, दिव्यांशी शर्मा, रवि शर्मा, जाह्नवी कंवर, प्रांजलि सिंह, दीपाली माथुर, आयुषी अजमेरा, ज्योति सेवानी, सुधा गौतम, स्फूर्ति कावरा, पूजा भगतानी, जब्बार खान को, वैदिक विज्ञान संकाय में हिना वरलानी को, प्रबंध अध्ययन संकाय में सिमरन सदवानी व खुशी रामनानी को, पत्रकारिता व जनसंचार संकाय में संदीप अहलावत को, शिक्षा संकाय में वर्तिका कटारा व राशि सहगल को, विधि संकाय में राधी गुप्ता को स्वर्ण पदक मिले।

कुलाधिपति पदक छात्राओं को

दीक्षांत समारोह में दो कुलाधिपति पदक प्रदान किए गए। यह पदक विज्ञान संकाय में प्रांजलि सिंह व वाणिज्य संकाय में मेघना खत्री को दिया गया।

विश्वविद्यालय समाचार पत्रों में

एमडीएस विवि और राजधानी कॉलेज दिल्ली के मध्य अकादमिक पर हुआ एमओयू

शैक्षणिक, शोध एवं नवाचार आधारित गतिविधियों को मिलेगा बढ़ावा

कार्स/अजमेर

उच्च शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में आपसी सहयोग को सुदृढ़ करने की दिशा में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय और राजधानी कॉलेज दिल्ली के मध्य एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। एमओयू का उद्देश्य दोनों संस्थानों के बीच शैक्षणिक, शोध एवं नवाचार आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देना है।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के अनुसार समझौते के अंतर्गत संयुक्त शोध परियोजनाएं, सेमिनार, कार्यशालाएं, फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम, विद्यार्थियों के लिए अकादमिक एवं कौशल-विकास गतिविधियां, पाठ्यक्रम समृद्धि तथा अनुसंधान प्रकाशनों में सहयोग जैसे विषय शामिल किए गए हैं। दोनों संस्थान मिलकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन और भारतीय ज्ञान परंपरा को सशक्त करने के लिए संयुक्त प्रयास करेंगे। वहीं राजधानी कॉलेज दिल्ली के प्रतिनिधियों ने इसे दीर्घकालिक शैक्षणिक साझेदारी की दिशा में एक सार्थक पहल बताया। एमओयू के माध्यम से दोनों संस्थान भविष्य में संयुक्त कार्यक्रमों और अनुसंधान पहलों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करेंगे।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर एवं आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर के बीच हुआ एमओयू

फैकल्टी डेवलपमेंट, शोध सहयोग एवं एनईपी-2020 के क्रियान्वयन को मिलेगी नई दिशा

दैनिक भास्कर

अजमेर 17-01-2026

अजमेर, शनिवार, 17 जनवरी, 2026 | 4

एमडीएसयूः स्वदेशी कंसोर्टियम पर कार्यशाला हुई

विदेशी कंपनियों का बढ़ता प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती

एमडीएसयू में कार्यशाला के दौरान उपस्थित प्रतिनिधि।

अजमेर| महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में स्वदेशी कंसोर्टियम विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें विशेषज्ञों ने विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते प्रभाव को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती बताया।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि आयातित महंगाई और मुद्रा अवमूल्यन से बचने के लिए आत्मनिर्भर भारत का व्यावहारिक क्रियान्वयन जरूरी है। मुख्य वक्ता, यूनेस्को एमजीआईईपी के अध्यक्ष प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने 'मेक इन इंडिया' के साथ 'मेड बाय भारत' का नारा दिया। उन्होंने समझाया कि स्थानीय स्तर पर खर्च किए गए धन का मल्टीप्लायर इफेक्ट रोजगार और आय बढ़ाता है, जबकि विदेशी कंपनियों का मुनाफा देश से बाहर चला जाता है।

कार्यशाला में साझा संसाधन और संयुक्त अनुसंधान के लिए कंसोर्टियम मॉडल पर जोर दिया गया। इस दौरान कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा सहित कई शिक्षाविद मौजूद रहे। वक्ताओं ने कृषि और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों में स्वदेशी विकल्प विकसित करने का आह्वान किया।

प्रादेशिक जगत 5

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

सिंधी भाषा का लोक संस्कृति, सनातन मूल्य व भारतीय सांस्कृतिक विविधता में महत्वपूर्ण योगदान : देवनानी

दैनिक नवज्योति 5

सिंधी भाषा व संस्कृति का संरक्षण ही राष्ट्र की शक्ति – देवनानी

एमडीएस यूनिवर्सिटी में राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा पारितोषिक वितरण कार्यक्रम

सिंधी समाज का जज्बा अद्वितीय और प्रेरणादायी

तकनीकी सत्र में किया पत्र वाचन

मेक इन इंडिया से आगे 'मेड बाय भारत' की सोच पर बल

एमडीएस विवि में स्वदेशी कंसोर्टियम पर कार्यशाला आयोजित

स्वदेशी विकल्प विकसित करने की रणनीतियों पर चर्चा

विश्वविद्यालय समाचार पत्रों में

4 दैनिक नवज्योति

अजमेर में एशियन वाटरबर्ड की 96 प्रजातियों की मौजूदगी हुई दर्ज

मदस विवि के पर्यावरण विभाग की जलपक्षी गणना

एमडीएस परिसर में खेजड़ी वृक्षों को जूट से ढका

मदस विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में शिक्षकों- विशेषज्ञों ने की चर्चा

समाज ने परिश्रम और उद्यमशीलता से दिया विकास में सहयोग- देवनानी

निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार

सिंधु सनातन सभ्यता का केंद्र

सनातन मूल्यों की महान सभ्यता

दैनिक भास्कर अजमेर 30-01-2026

एमडीएसयू: संगीत-गायन पर सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं

हे री मैं तो प्रेम दीवानी...

सोशल रिपोर्टर | अजमेर

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की त्रिदिवसीय अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'दिग्नाद' के दूसरे दिन शास्त्रीय गायन प्रतियोगिताएं हुईं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत आधारित प्रतियोगिता में कहां आके रुकने थे ये रास्ते, जयतु जननी जन्मभूमि, ना माने श्याम, हे री मैं तो प्रेम दीवानी, छाप तिलक सब छीनी रे, सलोना सा सजन है और मैं हूं... गायन किया गया। प्रतियोगिता में तबला, बांसुरी, हारमोनियम समेत अन्य वाद्ययंत्र पर संगीत प्रस्तुति हुई। क्विज के अतिरिक्त विभिन्न सांस्कृतिक, बौद्धिक प्रतियोगिताएं भी हो रही हैं। मुख्य अतिथि देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश भडाणा रहे। उन्होंने कहा कि कुछ देश विरोधी शक्तियां राष्ट्रवाद को दूषित करने का प्रयास कर रही हैं, जिनसे सतर्क रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत तभी आत्मनिर्भर बनेगा जब स्वदेशी का भाव जन-जन में जागृत होगा। इसके लिए उन्होंने पांच 'भ'- भाषा, भोजन, भजन, भूषा व भ्रमण में स्वदेशी चयन का संकल्प लेने का आग्रह किया।

अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। कार्यक्रम संयोजक प्रो. सुभाष चंद्र ने आभार जताया। कार्यक्रम संचालन डॉ. राजू शर्मा ने किया। मानवता के लिए आर्थिक विस्तारवाद, राजनैतिक विस्तारवाद से अधिक घातक है...विषय पर वाद विवाद समेत अन्य प्रतियोगिताएं हुईं। समापन शुक्रवार को नाटक, लोकनृत्य, शास्त्रीय व सामूहिक नृत्य के साथ होगा।

इंटर कॉलेज सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत, युवाओं में दिखा उत्साह

सतरंगी छटा से निखरा कैनवास, कार्टूनिंग एवं रंगोली में दिखाया हुनर

आज होंगी यह प्रतियोगिताएं

सह शैक्षिक गतिविधियां आज

दैनिक भास्कर अजमेर 29-01-2026

एमडीएसयू अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'दिग्नाद' की शुरुआत

4 जिलों के 360 प्रतिभागी, चयनित 60 विद्यार्थी वेस्ट जोन गुजरात के सांस्कृतिक महोत्सव में शामिल होंगे

अजमेर अजमेर, शुक्रवार, 30 जनवरी, 2026

राम भारत की पहचान, आदर्श और राष्ट्रीय चेतना का आधार-भड़ाणा

शिक्षा मंदिर में सुर-ताल की बयार

एमडीएस विवि में आईसीसी का आयोजन

इन प्रतियोगिताओं में दिखाई प्रतिभा

एमडीएसयू और सेंट स्टीफन कॉलेज किशनगढ़ के बीच एमओयू

न्यूनतम उत्तीर्णांक से कम आने पर ग्रेड शून्य, छात्राओं ने समझ लिया अंक

परीक्षा नियंत्रक नियंत्रक ने दूर किया असमंजस

अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता • साहित्यिक व संगीत श्रेणी की प्रतिस्पर्धाएं हुईं

विकसित भारत 2047 का संदेश: एमडीएसयू सांस्कृतिक मंच से युवाओं को स्वदेशी सूत्रों से जुड़ने का दिया संदेश

---

12 दैनिक नवज्योति

'दिग्नाद' में एसपीसी जीसीए ने गाड़े झंडे

• समग्र विजेता घोषित • उपविजेता सोफिया कॉलेज, जीजीसीए रहा तृतीय स्थान पर

ये रहे विजेता

विश्वविद्यालय समाचार पत्रों में

दैनिक नवज्योति

अजमेर में एशियन वाटरबर्ड की 96 प्रजातियों की मौजूदगी हुई दर्ज

मदस विवि के पर्यावरण विभाग की जलपक्षी गणना

एमडीएस परिसर में खेजड़ी वृक्षों को ठूंठ से ढका

मदस विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में शिक्षकों- विशेषज्ञों ने की चर्चा

समाज ने परिश्रम और उद्यमशीलता से दिया विकास में सहयोग- देवनानी

निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार

सिंधु सनातन सभ्यता का केंद्र

सनातन मूल्यों की महान सभ्यता

दैनिक भास्कर अजमेर 30-01-2026

एमडीएसयू: संगीत-गायन पर सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं

हे री मैं तो प्रेम दीवानी...

सोशल रिपोर्टर | अजमेर

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की त्रिदिवसीय अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'दिग्नाद' के दूसरे दिन शास्त्रीय गायन प्रतियोगिताएं हुईं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत आधारित प्रतियोगिता में कहां आके रुकने थे ये रास्ते, जयतु जननी जन्मभूमि, ना माने श्याम, हे री मैं तो प्रेम दीवानी, छाप तिलक सब छीनी रे, सलोना सा सजन है और मैं हूं... गायन किया गया। प्रतियोगिता में तबला, बांसुरी, हारमोनियम समेत अन्य वाद्ययंत्र पर संगीत प्रस्तुति हुई। क्विज के अतिरिक्त विभिन्न सांस्कृतिक, बौद्धिक प्रतियोगिताएं भी हो रही हैं। मुख्य अतिथि देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश भडाणा रहे। उन्होंने कहा कि कुछ देश विरोधी शक्तियां राष्ट्रवाद को दूषित करने का प्रयास कर रही हैं, जिनसे सतर्क रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत तभी आत्मनिर्भर बनेगा जब स्वदेशी का भाव जन-जन में जागृत होगा। इसके लिए उन्होंने पांच 'भ'- भाषा, भोजन, भजन, भूषा व भ्रमण में स्वदेशी चयन का संकल्प लेने का आग्रह किया।

अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। कार्यक्रम संयोजक प्रो. सुभाष चंद्र ने आभार जताया। कार्यक्रम संचालन डॉ. राजू शर्मा ने किया। मानवता के लिए आर्थिक विस्तारवाद, राजनैतिक विस्तारवाद से अधिक घातक है...विषय पर वाद विवाद समेत अन्य प्रतियोगिताएं हुईं। समापन शुक्रवार को नाटक, लोकनृत्य, शास्त्रीय व सामूहिक नृत्य के साथ होगा।

इंटर कॉलेज सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत, युवाओं में दिखा उत्साह

सतरंगी छटा से निखरा कैनवास, कार्टूनिंग एवं रंगोली में दिखाया हुनर

आज होंगी यह प्रतियोगिताएं

सह शैक्षिक गतिविधियां अहम

दैनिक भास्कर अजमेर 29-01-2026

एमडीएसयू | अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'दिग्नाद' की शुरुआत

4 जिलों के 360 प्रतिभागी, चयनित 60 विद्यार्थी वेस्ट जोन गुजरात के सांस्कृतिक महोत्सव में शामिल होंगे

अजमेर

अजमेर, शुक्रवार, 30 जनवरी, 2026

राम भारत की पहचान, आदर्श और राष्ट्रीय चेतना का आधार-भड़ाणा

शिक्षा मंदिर में सुर-ताल की बयार

एमडीएस विवि में आईसीसी का आयोजन

इन प्रतियोगिताओं में दिखाई प्रतिभा

एमडीएसयू और सेंट स्टीफन कॉलेज किशनगढ़ के बीच एमओयू

न्यूनतम उत्तीर्णांक से कम आने पर ग्रेड शून्य, छात्राओं ने समझ लिया अंक

परीक्षा नियंत्रक नियंत्रक ने दूर किया असमंजस

दैनिक भास्कर

अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता • साहित्यिक व संगीत श्रेणी की प्रतिस्पर्धाएं हुईं

विकसित भारत 2047 का संदेश: एमडीएसयू सांस्कृतिक मंच से युवाओं को स्वदेशी सूत्रों से जुड़ने का दिया संदेश

12 दैनिक नवज्योति

'दिग्नाद' में एसपीसी जीसीए ने गाड़े झंडे

• समग्र विजेता घोषित • उपविजेता सोफिया कॉलेज, जीसीए रहा तृतीय स्थान पर

ये रहे विजेता

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय का त्रयोदश दीक्षांत समारोह आयोजित, राज्यपाल बागडे ने किया संबोधित

'देश को विश्वगुरु बनाने में युवाओं की बड़ी भूमिका'

महानगर टाइम्स संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे ने कहा कि दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों के जीवन में एक नए आरंभ का प्रतीक है। उपाधि प्राप्त करना ही लक्ष्य नहीं होना चाहिए। इसके साथ बौद्धिक क्षमता, नैतिक मूल्यों और राष्ट्र के प्रति दायित्वबोध का विकास भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यह समावर्तन संस्कार प्राचीन भारतीय परंपरा से जुड़ा है। इसमें गुरु शिष्यों को अंतिम उपदेश देते थे। सत्य के मार्ग पर चलने, धर्म का आचरण करने और शिक्षा पर अहंकार नहीं करने की सीख देते थे।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय का त्रयोदश दीक्षांत समारोह गुरुवार को विश्वविद्यालय के सत्यार्थ सभागार में आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति बागडे ने की। उन्होंने कहा कि उपाधि प्राप्त विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण में अपनी शिक्षा का उपयोग करें और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्प के अनुरूप वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र एवं विश्वगुरु बनाने में सक्रिय भूमिका निभाएं। उन्होंने विद्यार्थियों से राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसरों में शोध एवं प्रयोगशालाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि बौद्धिक विकास का प्रमाण व्यक्ति के कार्य और व्यक्तित्व से परिलक्षित होता है। साथ ही विद्यार्थियों को खेलकूद के माध्यम से शारीरिक रूप से सुदृढ़ बनने, नैतिकता अपनाने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधरोपण एवं उसके संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर राज्यपाल बागडे ने बृहस्पति भवन के सामने स्थित दो उद्यानों का नामकरण एक भारत श्रेष्ठ भारत विहार एवं संस्कृति विहार करने की घोषणा की। इस मौके पर राज्यपाल ने अजमेर के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि अजमेर का प्राचीन नाम अजयमेरु रहा है। इसे चौहान शासक अजयराज ने बसाया था। उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती को युगपुरुष बताते हुए कहा कि वेदों की ओर लौटो का उनका संदेश आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने शिक्षा को व्यवहार से जोड़ने, चरित्र निर्माण, आत्मविकास, ब्रह्मचर्य, योग, प्राणायाम, वेद-उपनिषद तथा मातृभाषा और संस्कृत में अध्ययन की प्रेरणा दी।

राज्यपाल ने प्रदान की उपाधि

राज्यपाल ने विभिन्न संकायों के 54 शोधार्थियों को विद्या वाचस्पति पीएचडी की उपाधि प्रदान की। साथ ही वर्ष 2020 से 2025 के मध्य उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन करने वाले 2 विद्यार्थियों को कुलाधिपति पदक तथा वर्ष 2023, 2024 एवं 2025 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 40 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इन्होंने भी रखे विचार

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि दीक्षांत समारोह वह क्षण है जब विद्यार्थियों के सपनों को औपचारिक मान्यता मिलती है। शिक्षा ही मानव को सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। उन्होंने तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक मूल्यों और संवेदनशीलता को बनाए रखने की आवश्यकता बताई। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि यह समारोह भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा का गौरवशाली उदाहरण है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि उपाधि मंजिल नहीं, बल्कि उड़ान की शुरुआत है। बदलते समय में समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप नवाचार एवं अनुसंधान पर कार्य करना आज की आवश्यकता है।

राज्यपाल ने भैरव धाम पहुंचकर की पूजा-अर्चना

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने गुरुवार को अजमेर के राजगढ़ स्थित मसाणिया भैरव धाम पहुंचकर पूजा-अर्चना की। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी भी इस दौरान उपस्थित रहे। उन्होंने भैरूजी से राज्य के लोगों की सुख-समृद्धि और संपन्नता के लिए प्रार्थना की। राज्यपाल ने भैरव धाम के सर्व धर्म शक्ति स्तंभ के 23वें स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भैरव शब्द ही भय से मुक्ति प्रदान करने वाला है। भैरव काल के भी स्वामी हैं। इसलिए उन्हें 'काल भैरव' भी कहा गया है। उन्होंने मसाणिया भैरव धाम के उपासक चम्पालाल महाराज का अभिनंदन करते हुए कहा कि ऐसे उपासक विरले होते हैं, जो अपना सर्वस्व सेवा को अर्पण कर भगवान की शरण में वास करते हैं।

विद्यार्थी सदा सत्य का आचरण करें, शिक्षा का अहंकार नहीं करें: बागड़े

एमडीएस विवि का 13वां दीक्षांत समारोह, राज्यपाल ने प्रदान किए डिग्री और पदक

मॉर्निंग न्यूज़

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय परिसर में गुरुवार को 13वां दीक्षांत समारोह समारोह पूर्वक आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने विद्यार्थियों को पदक व डिग्रियां प्रदान की। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि अपने पास सभ्यता होना बहुत जरूरी है।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि दीक्षांत का यह पावन अवसर हमें हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति से जोड़ने वाला है, जिसमें गुरु अपने शिक्षक को शिक्षा समाप्ति के बाद अंतिम उपदेश दिया करते थे। यह उपदेश होता था की सदा सत्य का आचरण करेंगे, कर्म के साथ चलेंगे और सदा अपनी शिक्षा का अहंकार नहीं करेंगे। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने गुरुवार को एमडीएस यूनिवर्सिटी के 13वें दीक्षांत समारोह में शिरकत की। इस मौके पर विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, कैबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत और कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश अग्रवाल ने राज्यपाल का पुष्पगुच्छ व मॉमेंटो देकर अभिनंदन किया।

विद्यार्थियों को प्रदान किए मेडल व डिग्रियां: राज्यपाल बागड़े ने कहा कि अपने पास सभ्यता भी होनी चाहिए। आप सभी को समझ आ गया होगा कि मैं डिग्रियां पहले क्यों नहीं बाटीं। आपकी परंपरा है की एक-एक संकाय का नाम पुकारा और डिग्री लेकर फोटो निकाल कर अपनी जगह पर बैठना था, लेकिन जगह पर नहीं बैठते। वह सभी बाहर चले जाते और वापस नहीं आते हैं। इसलिए पदक और डिग्रियां अंत में बांटी गई। समारोह में 54 पीएचडी डिग्री और 40 गोल मेडल प्रदान किए गए। इस अवसर पर कुल 104677 डिग्री का वितरित की गई।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवाओं की भूमिका जरूरी

बागड़े ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं विद्यार्थियों के लिए नव नवीन का आरंभ है। यही वह अवसर है, जहां आप अपनी प्राप्त शिक्षा का उपयोग राष्ट्र और समाज उत्थान के लिए करेंगे। भारत आज विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था पर है। 2047 तक विकसित भारत बनाने का संकल्प आगे बढ़ रहा है। इस यात्रा में युवाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय कैंपस में बौद्धिक क्षमता बढ़ाए ऐसा वातावरण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि दृष्टि विशाल होना यही शिक्षा का अर्थ है, दृष्टि विशाल रही तो किसी को बहुत समझ आता है और उसके बौद्धिक क्षमता भी बढ़ती है। शारीरिक क्षमता के लिए खेलकूद के भी आयोजन होने चाहिए। शारीरिक स्थिति अच्छी नहीं रही तो कितनी भी डिग्री हो या बुद्धिमान हो उसका राष्ट्र और समाज के लिए कोई उपयोग नहीं होगा।

बौद्धिक क्षमता वाला ही नौकरी कर पाएगा

बागड़े ने कहा कि आजकल नौकरी करना बहुत कठिन है, जिसकी बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी वहीं नौकरी पर पाएगा, जिसके पास बौद्धिक क्षमता नहीं है, वह पीछे ही रहेगा। कभी पीछे रहने के बाद शिक्षक बन जाएंगे और फिर उन विद्यार्थियों का क्या होगा। आप आईएएस आईपीएस ऑफिसर बने यह इच्छा शक्ति क्यों नहीं बन रही उसका यही कारण है आपके मन में डर है। अगर हिम्मत होगी कि मैं यह परीक्षा भी पास कर लूंगा तो वह परीक्षा भी पास कर लेंगे। लेकिन वह हिम्मत नहीं है, जो जोश हिम्मत थी वह आज नहीं रही है। हिम्मत केवल कॉलेज से नहीं प्राइमरी स्कूल से ही बढ़ेगी।

FOLLOW US ON OUR SOCIAL MEDIA PLATFORMS

WHATSAPP

YOUTUBE

FACEBOOK

INSTAGRAM

@MDSUAJMER1987

M.D.S. UNIVERSITY AJMER

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
त्रयोदश दीक्षान्त समारोह
गुरुवार, 25 दि